वर्ष : 17 अंक: 54 | आगरा | शुक्रवार 06 जून 2025 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रु.

उत्तरप्रदेश ,मध्यप्रदेश,छत्तीसगढ़,नई दिल्ली व राजस्थान से एक साथ प्रकाशित

सांध्य पहल

उत्तरप्रदेश में सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला हिन्दी दैनिक

आज का तापमान
अधिकतम 39 डिग्री
न्यूनतम 30 डिग्री

नारीशक्ति के शौर्य और प्रेरणा..., पीएम मोदी का कच्छ की बहनों को तोहफा; अपने आवास पर लगाया सिंदूर का पौधा

पीएम मोदी विश्व पर्यावरण दिवस-2025 के शुभ अवसर पर भगवान महावीर वनस्थली पार्क, नई दिल्ली में 'एक पेड़ मां के नाम' पहल के तहत पौधारोपण करते हुए।

नई दिल्ली,ए.।

पीएम मोदी ने अपने दिल्ली आवास पर आज सिंदूर का एक पौधा लगाया। इस पौधे को लेकर उन्होंने एक सोशल मीडिया पर पोस्ट भी किया है। इस पोस्ट में उन्होंने कहा, विश्व पर्यावरण दिवस पर आज मुझे पौधे को नई दिल्ली के प्रधानमंत्री आवास में लगाने का सौभाग्य मिला है। पीएम मोदी ने कहा है,1971 के युद्ध में साहस और पराक्रम की अद्भुत मिसाल पेश करने वाली कच्छ की वीरांगना माताओं-बहनों ने हाल ही में गुजरात के दौरे पर मुझे सिंदूर का पौधा भेंट किया था। इस कदम को हाल ही में हुए ऑपरेशन सिंदूर के प्रति भी एक संकेत के रूप में देखा जा रहा है।

कच्छ में महिलाओं ने भेंट किए थे पौधे

हाल ही में पीएम मोदी कच्छ गए थे। कच्छ में 1971 के युद्ध में अद्भुत साहस दिखाने वाली महिलाओं के एक समूह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की थी और उन्हें सिंदूर के पौधे भेंट किए थे। प्रधानमंत्री मोदी इससे बेहद अभिभूत हुए और उन्होंने कहा कि वे अपने आवास पर यह सिंदूर लगाएंगे। आज विश्व पर्यावरण दिवस पर उन्होंने 7, लोक कल्याण मार्ग स्थित अपने आवास पर सिंदूर का पौधा लगाया।

प्लास्टिक प्रदूषण को खत्म करना है थीम

एक्स पर पोस्ट किए गए एक वीडियो संदेश में इससे पहले पीएम मोदी ने कहा था कि वैश्विक जलवायु की सुरक्षा के लिए हर देश को स्वार्थ से ऊपर उठना होगा। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक प्रदूषण को खत्म करना इस साल के विश्व पर्यावरण दिवस का विषय है और भारत पिछले चार-पांच सालों से इस पर लगातार काम कर रहा है। मोदी ने कहा कि मिशन लाइफ, जो संसाधनों के सोच-समझकर इस्तेमाल करने के लिए कहता है, दुनिया भर में एक जन आंदोलन बन रहा है। उन्होंने कहा कि लाखों लोगों ने अपने जीवन में कम करो, दोबारा इस्तेमाल करो और रीसाइकिल करो के मंत्र को अपनाया है।

अयोध्या में राम दरबार की प्राण प्रतिष्ठा सूरत के कारोबारी ने हीरे के आभूषण दान किए

अयोध्या,ए.।

अयोध्या के राम मंदिर में राम दरबार की प्राण प्रतिष्ठा हो गई। सीएम योगी ने राम दरबार का पूजन किया। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम अभिजीत मुहूर्त में सुबह 11.25 से 11.40 बजे तक चला। रामलला के गर्भगृह के ऊपर यानी फर्स्ट फ्लोर पर राम दरबार बनाया गया है।

इसमें श्रीराम, मां सीता, तीनों भाई- लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के साथ हनुमानजी की मूर्तियां हैं। काशी के पुरोहित जय प्रकाश त्रिपाठी ने 101 पंडितों के साथ प्राण प्रतिष्ठा कराई। मंत्रोच्चारण के बाद मूर्तियों की आंखों पर बंधी पट्टियां खोली गईं, उन्हें आइना दिखाया गया। भगवान राम सहित चारों भाइयों के हाथों में धनुष हैं।

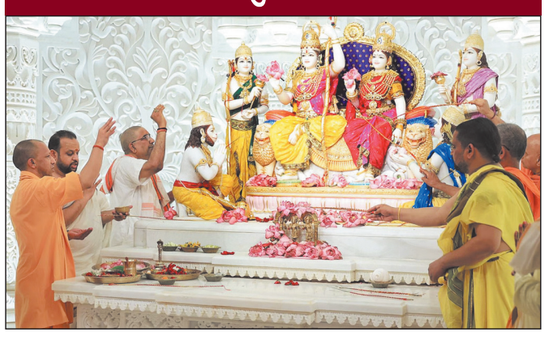

जहां गर्भगृह में भगवान राम बालक के रूप में हैं, वहीं राम दरबार में राजा के रूप में विराजमान हैं। श्रद्धालु राम दरबार के दर्शन कब से कर सकेंगे, ट्रस्ट ने अभी इसके बारे में कोई जानकारी नहीं दी है।

योगी बोले- मोदी आधुनिक भारत के भगीरथ

इस मौके पर सीएम योगी ने प्रधानमंत्री मोदी को आधुनिक भारत का भगीरथ बताया। नमामि गंगे परियोजना से पीएम ने गंगा की पवित्रता को फिर से हासिल किया।

योगी ने कहा कि सभी जिलाधिकारियों से कहा गया है कि वो अपने-अपने जिले की एक नदी को पुनर्जीवित करें। नदियों में न सीवर डाला जाए, न नाले गिराए जाएं, न मरे हुए जानवर फेंके जाएं।

TMC सांसद महुआ मोइत्रा ने बीजद नेता से शादी की: पिनाकी मिश्रा पुरी के पूर्व सांसद

नई दिल्ली/कोलकाता,ए.।

तृणमूल कांग्रेस की चर्चित सांसद महुआ मोइत्रा ने बीजद नेता पिनाकी मिश्रा से दूसरी शादी कर ली है। सोशल मीडिया पर दोनों की एक तस्वीर सामने आई है। दावा किया जा रहा है कि दोनों ने 3 मई को ही जर्मनी में शादी कर ली थी। हालांकि, सेरेमनी को पूरी तरह से प्राइवेट रखा गया था। महुआ 50 साल की हैं। वह बंगाल के कृष्णानगर से दो बार की सांसद हैं। वहीं, 65 साल के पिनाकी मिश्रा ओडिशा के पुरी के पूर्व सांसद और सुप्रीम कोर्ट के बड़े वकील भी हैं। महुआ या पिनाकी की ओर से शादी के बारे में कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है।

बेंगलुरु भगदड़ मामले में RCB समेत 3 के खिलाफ FIR

हाईकोर्ट ने स्टेट्स रिपोर्ट मांगी, सुनवाई 10 जून को

बेंगलुरु,ए.।

कर्नाटक पुलिस ने गुरुवार को भगदड़ मामले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (RCB), DNA इवेंट मैनेजमेंट कंपनी और कर्नाटक क्रिकेट एसोसिएशन के खिलाफ स्न्ढ्ढक्र दर्ज की। इन पर विक्ट्री परेड के दौरान आपराधिक लापरवाही का आरोप लगाया गया है।

FIR में कहा गया है कि भगदड़ की घटना अव्यवस्था और जिम्मेदार एजेंसियों की लापरवाही की वजह से हुई। उधर, इस मामले में हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। एक्टिंग चीफ जस्टिस वी कामेश्वर राव और जस्टिस सी एम जोशी बेंच ने राज्य सरकार को हादसे पर स्टेट्स रिपोर्ट पेश करने को कहा है। अब अगली सुनवाई 10 जून को होगी।

वहीं, याचिकाकर्ता के वकील ने कोर्ट से कहा, राज्य सरकार को यह बताना चाहिए कि आरसीबी के खिलाड़ियों को सम्मानित करने का फैसला किसने लिया है। जो खिलाड़ी देश के लिए नहीं खेलते, उन्हें सम्मानित करने की क्या मजबूरी थी।

दरअसल, 4 मई को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (RCB) ने पहली बार IPL खिताब जीतने पर बेंगलुरु में विक्ट्री परेड का आयोजन किया था। पहले राज्य सरकार ने विधानसभा परिसर में सभी खिलाड़ियों का सम्मान किया।

अमरनाथ यात्रा- पहली बार पहलगाम-बालटाल रूट पर जैमर लगाए जाएंगे: 58 हजार जवान भी तैनात होंगे

3 जुलाई से शुरू होगी 38 दिन की यात्रा

श्रीनगर,ए.।

अमरनाथ यात्रा के काफिले की सुरक्षा के लिए पहली बार जैमर लगाए जाएंगे, जिसे केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (सीएपीएफ) सुरक्षा प्रदान करेगी। काफिले के गुजरने के दौरान सुरक्षा के लिए यात्रा के दोनों रूट और नेशनल हाईवे की ओर जाने वाली सभी सड़कों को बंद कर दिया जाएगा। यह फैसला 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के बाद आया है। बायसरन घाटी में हुए आतंकी हमले में 26 पर्यटक मारे गए थे। इसके अलावा यात्रा के लिए अलग-अलग केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (CAPF) की 581 कंपनियां तैनात की जाएंगी। जिनमें लगभग 42000 से 58,000 जवान शामिल हैं। CAPF में सेंट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स, बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स, सशस्त्र सीमा बल, इंडो तिब्बत बॉर्डर पुलिस, सेंट्रल इंडस्ट्री सिक्योरिटी फोर्स शामिल रहती है।

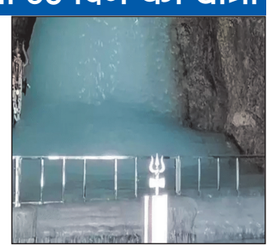

राजस्थान के हेल्थ-मिनिस्टर की पत्नी की साइलेंट अटैक से मौत

जयपुर,ए.। राजस्थान के हेल्थ मिनिस्टर गजेंद्र सिंह खींवसर की पत्नी प्रीति कुमारी की साइलेंट अटैक से गुरुवार सुबह मौत हो गई। प्रीति कुमारी रात को खाना खाकर सोई थीं। सुबह नहीं उठी तो परिजन ने उन्हें उठाने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने कोई रिस्पॉन्स नहीं किया। घरवाले उन्हें नजदीक के प्राइवेट हॉस्पिटल (दुर्लभजी) लेकर गए, यहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। अंतिम संस्कार शुक्रवार सुबह 9 बजे खींवसर (नागौर) में होगा। डॉक्टरों का कहना है कि प्रीति कुमारी को साइलेंट अटैक आया था, इसके कारण सोने के बाद उनकी डेथ हो गई। बताया जा रहा है कि डॉक्टरों की एक टीम सुबह मंत्री के घर भी पहुंची थी, जहां उनको शुरुआती इलाज भी दिया था, लेकिन कोई रिस्पॉन्स नहीं आने के बाद प्रीति को हॉस्पिटल लेकर

दिल्ली में 5 महीने के बच्चे की कोरोना से मौत: 4 राज्यों में एक दिन में 437 मरीज मिले

देश में 4866 एक्टिव केस

नई दिल्ली,ए.।

देश में कोरोना के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। गुरुवार को दिल्ली में कोविड से जुड़ी दो और मौतें दर्ज की गईं। इनमें एक पांच महीने का बच्चा भी शामिल है। दिल्ली में केरल के बाद कोरोना के सबसे ज्यादा एक्टिव 562 केस हैं। दिल्ली में इस साल 1 जनवरी से अब तक कोरोना से सात मौतें हुई हैं। देश में कोरोना से मौत का आंकड़ा 51 पहुंच गया है। बुधवार को कोरोना से कुल 7 लोगों की जान चली गई। इनमें महाराष्ट्र में तीन, दिल्ली-कर्नाटक में दो-दो मौतें। दिल्ली सहित 15 राज्यों में 564 मरीज मिले, इनमें से 437 मामले सिर्फ 4 राज्यों से हैं।

केरल में सबसे ज्यादा 114, कर्नाटक में 112, पश्चिम बंगाल में 106 और दिल्ली में 105 केस सामने आए। इस तरह देश में एक्टिव केस की संख्या 4866 हो गई है। इस बीच, केंद्र सरकार गुरुवार को देश भर के राज्यों के चुनिंदा अस्पतालों में मॉक ड्रिल करेगी। इस दौरान इन अस्पतालों में ऑक्सीजन सप्लाई, जरूरी दवाओं की स्थिति और वेंटिलेटर की व्यवस्थाओं को परखा जाएगा।

राज ठाकरे बोले-महाराष्ट्र में सिर्फ मराठी और इंग्लिश पढ़ाई जाए: सरकार लिखित आदेश जारी करे कि हिंदी अनिवार्य नहीं

मुंबई,ए.।

MNS नेता राज ठाकरे ने महाराष्ट्र सरकार से अपील करते हुए कहा, वो लिखित आदेश जारी करे कि पहली कक्षा से बच्चों को सिर्फ मराठी और इंग्लिश पढ़ाई जाएगी, हिंदी को अनिवार्य नहीं किया जाएगा। उन्होंने बुधवार को मीडिया से बातचीत में कहा कि सरकार ने पहले तीन भाषाएं पढ़ाने का फैसला लिया था और अब हिंदी की किताबें छप भी गई हैं। अगर सरकार अब फिर से हिंदी को जरूरी करती है, तो MNS आंदोलन करेगी।

महाराष्ट्र में 16 अप्रैल को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 को लागू करने का फैसला लिया गया था, इसके तहत राज्य के मराठी और अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में पहली से पांचवीं कक्षा के छात्रों के लिए हिंदी को अनिवार्य तीसरी भाषा बनाया गया था।

हालांकि, राज्य में कई संगठन और राजनीतिक दलों ने हिंदी को अनिवार्य करने का विरोध किया। इसके चलते राज्य सरकार ने 22 अप्रैल को हिंदी अनिवार्य करने का अपना निर्णय वापस ले लिया था। पत्रकारों से बातचीत के दौरान महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडनवीस ने कहा था कि स्टूडेंट्स तीसरी भाषा अपने मन से चुन सकेंगे। हिंदी अनिवार्य नहीं होगी।

थरूर ने कहा- देशहित में काम करना पार्टी विरोधी नहीं: बॉर्डर पार हम सिर्फ भारतीय

अमेरिका में बोले- भारत को किसी की सलाह की जरूरत

नई दिल्ली,ए.।

भारत सरकार के डेलीगेशन में अमेरिकी दौरे पर गए कांग्रेस नेता शशि थरूर ने गुरुवार को पार्टी विरोधी बयानबाजी पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा- जो लोग राष्ट्रहित में काम करने को पार्टी विरोधी गतिविधि मानते हैं, उन्हें खुद से सवाल करना चाहिए। थरूर ने यह जवाब कांग्रेस छोड़ने की अटकलों के सवाल पर दिया। उन्होंने कहा- जब आप देश की सेवा कर रहे हों, तब ऐसी चीजों की ज्यादा परवाह नहीं करनी चाहिए। हमारे राजनीतिक मतभेद भारत के बॉर्डर के बाहर जाते ही खत्म हो जाते हैं। सीमा पार करते ही हम पहले भारतीय होते हैं। थरूर इन दिनों अमेरिकी दौरे पर हैं, जहां वे ऑपरेशन सिंदूर को लेकर बने मल्टी पार्टी डेलीगेशन को लीड कर रहे हैं। सरकार के समर्थन में बोलने पर कांग्रेस नेता उदित राज ने थरूर को भाजपा का सुपर प्रवक्ता बताया।

ट्रम्प पर थरूर बोले- भारत को किसी की सलाह की जरूरत नहीं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की भारत-पाक के बीच मध्यस्थता के बयान पर थरूर बोले- मैं यहां किसी विवाद को हवा देने नहीं आया हूं। अमेरिकी राष्ट्रपति का सम्मान है।

उज्जैन में वेलनेस निवेश को मिला मुख्यमंत्री का प्रोत्साहन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की स्पिरिचुअल और वेलनेस समिट में वेलनेस क्षेत्र के निवेशकों से वन-टू-वन चर्चा

भोपाल,ब्यूरो।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन में स्पिरिचुअल और वेलनेस समिट में वेलनेस क्षेत्र के निवेशकों से वन-टू-वन चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निवेशकों को मध्यप्रदेश में निवेश के लिए खुले दिल से आमंत्रित किया और राज्य की अनुकूल निवेश नीतियों पर प्रकाश डाला। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निवेशकों को मध्यप्रदेश में निवेश के लिए प्रोत्साहित किया।

सभी निवेशकों ने मध्यप्रदेश की निवेश अनुकूल और प्रगतिशील नीतियों की सराहना की और प्रदेश में निवेश के लिए संकल्प लिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव से अरबिंदो हॉस्पिटल ग्रुप के चेयरमैन डॉ. विनोद भंडारी, लीजर होटल्स ग्रुप के डायरेक्टर श्री मुकुंद प्रसाद, शतायु आयुर्वेद के सीईओ और एमडी डॉ. मृत्युंजय स्वामी, मेफ़ेयर ट्रैवल्स के एमडी श्री शरद थडानी, लाभम ग्रुप के डायरेक्टर श्री युगांश सोनी, शांतिगिरी आश्रम के जोनल हेड स्वामी चितासुधन ज्ञान तपस्वी, रॉयल ऑर्किड होटल के डायरेक्टर श्री सुदीप रॉय, एरा हॉस्पिटैलिटी के संस्थापक श्री शिवंदर सिंह, सीएचएल हॉस्पिटल ग्रुप के डायरेक्टर श्री राजुल भार्गव, लेटेन्ट डेवकॉन के डायरेक्टर श्री देवांग कपाडिया, जिंदल नेचरक्योर इंस्टीट्यूट के चीफ एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर श्री सुधीर एम.वी., ट्रैवलपैक के चेयरमैन श्री अशोक पटेल, हार्टफुलनेस इंटरफेथ प्रोग्राम्स एंड इवेंट के डायरेक्टर श्री त्रिलोचन चावला और सनसेट डेजर्ट कैंप के सीईओ और एमडी श्री हितेश्वर सिंह सिसौदिया ने वन-टू-वन चर्चा की।

जिलाधिकारी संजीव रंजन ने गुरुवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय संयुक्त चिकित्सालय का किया औचक निरीक्षण

चिकित्सकों को ओपीडी समय में मौजूद रहकर मरीजों का उपचार सुनिश्चित करने के दिए निर्देश, चिकित्सालय में आने वाले प्रत्येक मरीज को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण चिकित्सकीय सेवा सुनिश्चित कराई जाएं

अलीगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन ने गुरुवार को प्रातः 10:15 बजे पंडित दीनदयाल उपाध्याय संयुक्त चिकित्सालय का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने चिकित्सालय में साफ-सफाई, औषधियों की उपलब्धता, चिकित्सा सुविधाओं एवं ओपीडी संचालन की स्थिति का गहनता से अवलोकन किया। जिलाधिकारी ने सभी चिकित्सकों को निर्देशित किया कि वे निर्धारित ओपीडी समय में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें और गंभीरता व संवेदनशीलता के साथ प्रत्येक मरीज का उपचार करें। उन्होंने कहा कि चिकित्सालय में आने वाले प्रत्येक मरीज को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण चिकित्सकीय सेवा मिलनी चाहिए, जिससे आमजन में सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति विश्वास और सुदृढ़ हो। श्री रंजन ने अस्पताल परिसर में साफ-सफाई की स्थिति पर भी विशेष ध्यान देने को कहा और अधिकारियों को निर्देशित किया कि अस्पताल परिसर को स्वच्छ, व्यवस्थित एवं रोगाणुरहित बनाए रखा जाए। उन्होंने औषधि भंडार की स्थिति की भी समीक्षा की और आवश्यक दवाओं की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। डीएम ने उपस्थित चिकित्सकों एवं स्टाफ को चेतावनी देते हुए कहा कि किसी भी प्रकार की लापरवाही अथवा मरीजों के प्रति उदासीनता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। मरीजों को बेहतर सुविधा देना प्रशासन एवं चिकित्सालय की प्राथमिकता है और इसमें किसी भी स्तर पर शिथिलता पर कठोर कार्रवाई की जाएगी। सर्वप्रथम डीएम पंजीकरण कक्ष पहुंचे। तीमारदार एवं मरीज लाइन से पर्चा बनवा रहे थे। चंदनिया से आए हिमांशु से पंजीकरण के बारे में जानकारी की। पंजीकरण काउंटर पर प्रशांत एवं उमर खान पंजीकरण करते पाए गए। ओपीडी कक्ष एक में डॉक्टर मेहुल मित्तल अपनी सीट पर नहीं पाए गए तो वहीं ओपीडी संख्या दो में भी चिकित्सक नहीं मिले। सीएमएस एमके माथुर ने बताया कि उनकी ड्यूटी आपातकालीन चिकित्सा कक्ष में है। ओपीडी संख्या तीन में डॉ0 अंकुर अग्रवाल इंटर्न डा0 सचिन शर्मा एवं डॉ0 सोफिया हसन के साथ मरीज देखते पाए गए। एनसीडी क्लीनिक में डॉ0 मुकुल भारद्वाज एवं काउंसलर सीमा अग्रवाल मरीज देखते मिलीं।

ओपीडी संख्या 5 में डॉक्टर तुफैल अहमद हड्डी रोग विशेषज्ञ नहीं पाए गए। सीएमएस ने बताया वह कोर्ट एविडेंस में गए हैं। डॉ0 एस के उपाध्याय मरीज देखते मिले। ओपीडी संख्या सात में डॉ0 अनिल कुमार मौर्य अपनी सीट पर नहीं थे। कमरे के द्वार पर डोरी बंधी पाई गई। जे0आर0 डॉ0 किरण कल्याण ने बताया की मरीजों की भीड़ को कंट्रोल करने के उद्देश्य से डोरी बंधी गई है जिसको मौके पर ही हटाया गया। डॉ0 कल्याण को एप्रन पहनने की सलाह दी गई। ओपीडी संख्या 8 के डॉ0 पी0 कुमार राउंड का जाना बताया गया। आर्थोपेडिक सर्जन डॉ0 संजीव मोहन, कार्डियोलोजिस्ट डॉ0 एस के सिंघल एवं वी0के0 सक्सेना मरीज देखते मिले।

ओम प्रशांत शर्मा ईसीजी टेक्नीशियन मौके पर मिले। डीएम के निरीक्षण तक कोई ईसीजी नहीं हुआ था। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन लगभग 50 ईसीजी हो जाते हैं। फिजियोथेरेपी कक्ष में 3 मरीज चिकित्सा लाभ लेते पाए गए। रेडियोलॉजी डिपार्टमेंट में आशीष प्रकाश एटा चुंगी से आए मरीज़ आरोही का अल्ट्रासाउंड करते पाए गए उन्होंने बताया कि 60 से 70 अल्ट्रासाउंड प्रतिदिन हो जाते हैं। एक्स रे कक्ष में जगजीवन राम टेक्नीशियन एक्स रे कर रहे थे। उन्होंने बताया कि अब तक 32 एक्सरे हो चुके हैं रोज का रोज रिपोर्ट दे देते हैं। आकस्मिक चिकित्सा कक्ष में 6 मरीज भर्ती पाए गए। आपातकालीन कक्ष में हाथरस से आए मरीज अंकित को डॉक्टर वाई पी सिंह चिकित्सीय परीक्षण करते पाए गए। निरीक्षण के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 नीरज त्यागी सहित चिकित्सा अधीक्षक डॉ0 एम0के0 माथुर उपस्थित रहे।

राज्य महिला आयोग अध्यक्षा डा0 बबीता चौहान 9 जून को सर्किटहाउस में करेंगी महिला जनसुनवाई

जनपद में महिला उत्पीड़न की रोकथाम एंव पीड़ित महिलाओं को त्वरित न्याय दिलानें के लिये होगी महिला जनसुनवाई, पीड़ित महिलाएं अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर जनसुनवाई से उठाएं लाभ

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। अध्यक्ष, राज्य महिला आयोग, उ0प्र0 शासन डा0 बबीता चौहान जी द्वारा जनपद में महिला उत्पीड़न की रोकथाम एंव पीड़ित महिलाओं को त्वरित न्याय दिलानें के लिये महिला जनसुनवाई का आयोजन दिनांक 09.06.2025 को पूर्वान्ह 11:00 बजे सर्किट हाउस सभागार में किया गया है। उ0प्र0 राज्य महिला आयोग की मा0 अध्यक्ष डा0 बबीता चौहान जी द्वारा जनपद में महिला उत्पीड़न से सम्बन्धित प्रकरणों की पुलिस आयुक्त अथवा उनकी ओर से नामित वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, महिला थानाध्यक्ष एवं सम्बन्धित थाने के क्षेत्राधिकारी के साथ महिला उत्पीड़न की घटनाओं की समीक्षा बैठक/महिला जनसुनवाई की जायेगी। महिला जनसुनवाई में अपने अपने विभाग की सूचनायें लेकर संबंधित अधिकारी भी उपस्थित रहेंगे तथा प्राप्त आवेदनों का निस्तारण किया जाएगा। मा0 राज्य महिला आयोग की अध्यक्षा द्वारा दिनांक 09.06.2025 को समय पूर्वान्ह 11:00 बजे नव निर्मित सर्किट हाउस में जनसुनवाई की जाएगी।

गायत्री परिवार के सदस्यों ने मनाई गायत्री जयंती

हाथरस। गायत्री जयंती के अवसर पर विनोद विहार कॉलोनी स्थित गायत्री शक्तिपीठ पर यज्ञ, संस्कार आदि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गायत्री परिवार के सदस्यों ने यज्ञ में आहुति डालकर विश्व शान्ति एवं मानव कल्याण के लिए प्रार्थना की। बृहस्पतिवार को सुबह 6 बजे गायत्री परिवार के सदस्यों ने गायत्री मन्त्र का अखंड जप प्रारम्भ किया। अखंड जप की समाप्ति के बाद संस्कार शाला में गुरु दीक्षा, यज्ञोपवीत, पुंसवन आदि संस्कार किए गए। इसके बाद यज्ञ हवन आयोजित किया गया। यज्ञ हवन में जिले भर से आए गायत्री परिवार के लोगों ने आहुति डालकर विश्व शांति एवं मानव कल्याण के लिए प्रार्थना की। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए गायत्री शक्तिपीठ की मुख्य प्रबंध ट्रस्टी चंद्रकांता शर्मा ने कहा कि ज्येष्ठ माह में शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को गायत्री जयंती मनाई जाती है। इस दिन मां गायत्री का अवतरण हुआ था। उन्होंने कहा कि वेदों की उत्पत्ति मां गायत्री से ही हुई है। इसलिए गायत्री को वेदमाता के नाम से भी जाना जाता है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने गायत्री को जन जन तक पहुंचाया। यज्ञ में मुख्य यजमान संजय सेंगर, माधुरी सेंगर व नीलम जायसवाल, यतेंद्र जायसवाल रहे। व्यास पीठ से यज्ञ गिरीश शर्मा व राकेश शर्मा ने कराया। कार्यक्रम में कुन्ती शर्मा, पूजा शर्मा, अलका वार्ष्णेय, राकेश शर्मा, सरोज खोखर, अनुराधा शर्मा, मीरा दीक्षित, गौरव पांडे, मुकुल शर्मा, गुड्डू परसौली, आकाश शर्मा, रविन्द्र दीक्षित, मंजू पांडे, प्रवेश शर्मा, अलका शर्मा, हनी पाराशर, शताक्षी, अनुराधा मित्तल, सोनिया पाठक, नूतन राना, शीतल शर्मा, मनीष पाठक आदि उल्लेखनीय रूप से उपस्थित थे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर दीवानी न्यायालय परिसर में हुआ वृक्षारोपण

पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी या संस्थागत जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है-जनपद एवं सत्र न्यायाधीश

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। विश्व पर्यावरण दिवस के शुभ अवसर पर, दीवानी न्यायालय आगरा के परिसर में एक भव्य वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम माननीय जनपद न्यायाधीश श्री संजय कुमार मलिक के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना तथा हरित और स्वच्छ न्यायिक परिसर की दिशा में एक सकारात्मक पहल करना था। इस अवसर पर माननीय श्री संजय कुमार मलिक, जनपद एवं सत्र न्यायाधीश, आगरा ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर बल देते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी या संस्थागत जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है। यदि हम आज सजग नहीं हुए, तो भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक संकटपूर्ण वातावरण छोड़ जाएंगे। वृक्षारोपण प्रकृति के प्रति हमारी कृतज्ञता व्यक्त करने का एक प्रभावी माध्यम है। कार्यक्रम में न्यायिक अधिकारियों की सक्रिय सहभागिता रही। इस आयोजन में उपस्थित विशिष्ट न्यायिक अधिकारियों में निम्नलिखित सम्मिलित थे श्री पुष्कर उपाध्याय, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, आगरा श्री ज्ञानेंद्र राव, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, आगरा श्री पवन श्रीवास्तव, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, आगरा श्रीमती ज्योत्सना सिंह, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, आगरा श्री अमरजीत, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, आगरा श्री मृदुल दुबे, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, आगरा श्री राजीव कुमार पालीवाल, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश, आगरा डॉ. दिव्यानंद द्विवेदी, अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश / सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, आगरा इसके अतिरिक्त, अन्य अनेक न्यायिक अधिकारी, न्यायालय के कर्मचारीगण, व अधिवक्ता समुदाय के सदस्यगण भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और उन्होंने वृक्षारोपण में भागीदारी करते हुए पर्यावरणीय जागरूकता के इस प्रयास को सशक्त किया। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित जनों ने यह संकल्प लिया कि वे न केवल वृक्ष लगाएंगे, अपितु उनकी देखभाल कर उन्हें सुरक्षित और समृद्ध बनाएंगे, जिससे आने वाली पीढ़ियों को एक स्वच्छ, हरित और सुरक्षित वातावरण मिल सके। डॉ दिव्यानंद द्विवेदी अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण आगरा।

पालिकाध्यक्ष श्वेता चौधरी ने मनाया मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का जन्मदिवस

हाथरस। वसुन्धरा स्थित नगर पालिका कैम्प कार्यालय पर मा0 मुख्यमंत्री आदरणीय योगी आदित्य नाथ जी का 53 वां जन्मदिवस पर पालिकाध्यक्ष श्वेता चौधरी ने मिष्ठान वितरण किया एवं विश्व पर्यावरण के उपलक्ष में पौधे वितरण किये साथ ही गंगा दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं दी। पालिकाध्यक्ष ने कहा कि आपका जीवन राष्ट्र सेवा, अनुशासन और आध्यात्मिक मूल्यों का प्रतीक है। उत्तर प्रदेश को विकास के पथ पर अग्रसर करने में आपका योगदान अतुलनीय है। आपकी दूरदर्शिता, निर्णायक नेतृत्व और निस्वार्थ कार्यशैली ने प्रदेश को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि आपको सदैव स्वस्थ रखें और दीर्घायु प्रदान करें, ताकि आप इसी प्रकार समाज व राष्ट्र की सेवा करते रहें। इस मौके पर सभासद दल के नेता अतुल चौधरी, सभासद अशोक गोला, सभासद सुन्दरम शर्मा, सभासद दिनेश कुमार (नन्ने भाई), सभासद काव्य वार्ष्णेय, सभासद सूरज माहोर, सभासद प्रतिनिधि धीरज जैन, मिलन अग्निहोत्री, ब्रजेश गौतम, दिनेश गुप्ता, शशिकांत, सोनू भारती सहित समस्त कर्मचारियों की उपस्थिति रही।

विश्व पर्यावरण दिवस पर आगरा मंडल में शपथ समारोह: पौधारोपण एवं जन जागरूकता रैली का हुआ आयोजन

सयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा इस वर्ष के लिए विश्व पर्यावरण दिवस-2025 की थीम प्लास्टिक प्रदूषण समाप्त करें रखी गई

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। विश्व पर्यावरण दिवस पर आगरा मंडल में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के तहत मंडल रेल प्रबंधक श्री तेज प्रकाश अग्रवाल द्वारा आगरा मंडल कार्यालय में शपथ समारोह का आयोजन किया गया। मंडल रेल प्रबंधक द्वारा अधिकारियो व रेल कर्मचारियों को पर्यावरण की शपथ दिलाई गयी व समपार फाटक संख्या 77 शाहगंज के पास परिजात संस्था के साथ मिलकर वृक्षारोपण किया गया एवं पर्यावरण जागरूकता का संदेश दिया गया। निर्धारित कार्यक्रम के तहत मंडल रेल प्रबंधक तेज प्रकाश अग्रवाल की अगुवाई में कुबेरपुर मालगोदाम में भी वृक्षारोपण किया गया। इस क्रम में मंडल रेल प्रबंधक ने निबंध, वाद-विवाद और चित्रकला प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया। मंडल रेल प्रबंधक श्री तेज प्रकाश अग्रवाल ने आगरा मंडल कार्यालय में पर्यावरण जागरूकता रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया। स्काउट एवं गाइड द्वारा पर्यावरण जागरूकता का संदेश बैनर पोस्टर के माध्यम से प्रसारित किया गया। पेड़ों की कटाई से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में रैली निकाल कर जागरूकता का संदेश दिया गया। रेलवे स्टेशन पर कर्मचारी, स्काउट एवं गाइड द्वारा पर्यावरण जागरूकता रैली निकाली गई। आगरा मंडल में दिनांक 22 मई से 5 जून 2025 तक ÷विश्व पर्यावरण दिवस पखवाड़ा÷ मनाया गया, इस वर्ष की थीम ÷एंड प्लास्टिक पॉल्यूशन÷ (प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करें) निर्धारित की गई है। इस अभियान के अंतर्गत आगरा कैंट, मथुरा जंक्शन, आगरा किला, ईदगाह जं. राजा की मंडी व धौलपुर स्टेशनों पर लगातार जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। पर्यावरण दिवस कार्यक्रम के अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री तेज प्रकाश अग्रवाल के साथ अपर मंडल रेल प्रबंधक इन्फ्रा/ श्री प्रनव कुमार तथा सभी शाखा अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर विश्व हिंदू परिषद द्वारा घर घर जाकर पौधा वितरण किए गए

हाथरस। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में आज विश्व हिंदू परिषद जिला मंत्री के नेतृत्व में घर-घर जाकर पौधा वितरण किया और लोगों को आज की दिन के विषय में बताया हर साल 5 जून को मनाया जाने वाला %विश्व पर्यावरण दिवस% हमें अपनी पृथ्वी, अपने पर्यावरण के प्रति हमारी सामूहिक और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों की याद दिलाता है। यह केवल एक दिन का उत्सव नहीं है, बल्कि यह एक प्रतिज्ञा है कि हम अपने ग्रह को स्वस्थ और हरा-भरा बनाए रखने के लिए लगातार प्रयास करेंगे। यह दिन दुनिया भर के लोगों को पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर सोचने और उनके समाधान के लिए प्रेरित करता है, ताकि हम सब मिलकर एक बेहतर और टिकाऊ भविष्य का निर्माण कर सकें। जिला संगठन मंत्री ने बताया जब हम पर्यावरण दिवस मना रहे हैं, तो हमें यह सोचना होगा कि हम प्रकृति से क्या ले रहे हैं और उसे बदले में क्या दे रहे हैं। हमारा पर्यावरण, जिसमें हवा, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधे और जीव-जंतु शामिल हैं, हमारे जीवन का आधार है।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सांसद व जनप्रतिनिधियों ने प्रशासनिक अधिकारियों के साथ किया पौधरोपण

हाथरस। विश्व पर्यावरण दिवस ''एक पेड़ मां के नाम'' कार्यक्रम के अंतर्गत सांसद अनूप प्रधान ने जनपद के विधायक गण और जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी सहित अन्य अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न प्रजातियों के पौध रोपित किये गये। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सासंद अनूप प्रधान ने अपने संबोधन में कहा कि हर साल 5 जून को हम विश्व पर्यावरण दिवस मनाते हैं। यह सिर्फ एक दिन नहीं है, यह एक जिम्मेदारी है। यह दिन हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम अपने पर्यावरण के साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं। हम सब जानते हैं कि पेड़ काटे जा रहे हैं, नदियाँ सूख रही हैं, हवा में ज़हर घुल रहा है और पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। यह सब कुछ हमारे ही कारण हो रहा है। प्रकृति हमसे कुछ नहीं लेती, बल्कि देती ही देती है शुद्ध हवा, मीठा पानी, ठंडी छाँव, जीवन के लिए भोजन। उन्होंने कहा कि सभी लोग एक वृक्ष मां के नाम अवश्य लगायें। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों से कहा कि आप सभी एक वृक्ष घर पर मां के नाम जरूर लगाए।

पुलिस अधीक्षक ने पुलिस लाईन परिसर में वृक्षारोपण किया

हाथरस। पुलिस अधीक्षक चिरंजीव नाथ सिन्हा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस-2025 के अवसर पर रिजर्व पुलिस लाइन हाथरस मे वृक्षारोपण कर संरक्षित एवं प्रदूषण मुक्त पर्यावरण का दिया संदेश । इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक द्वारा मौजूद अधिकारी/कर्मचारी गणों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रोत्साहित करते हुए पेड़, पौधे, जल को बचाने का संकल्प दिलाया गया । पुलिस अधीक्षक द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस-2025 की थीम "Beat Plastic pollution" का उल्लेख करते हुए सभी से अनुरोध किया कि इस विषय को इसलिए चुना गया है ताकि प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करना है ।क्योंकि प्लास्टिक प्रदूषण आज गंभीर वैश्विक समस्या बनी हुई है। विश्व पर्यावरण दिवस ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण, और जैव विविधता संरक्षण जैसे मुद्दो पर ध्यान केन्द्रित करना है।

टैगोर इंटरनेशनल स्कूल में मनाया गया पर्यावरण दिवस

हाथरस। टैगोर इंटरनेशनल स्कूल में पर्यावरण दिवस मनाया गया। प्रधानाचार्या श्रीमती रंजनाकुमार ने सभी छात्र छात्राओं को बताया कि पर्यावरण को पौधे लगाकर स्वच्छ रखा जा सकता है, जिससे हम सभी स्वस्थ्य रह सकते हैं । प्रबंधक किशनवीर सिंह ने कहा कि हम सभी को प्रति वर्ष पौधे लगाने चाहिए । जिससे सभी को स्वस्थ्य वातावरण मिलेगा। इस अवसर पर ब्रजेश शर्मा , प्रकाश वार्ष्णेय , राहुल सिंह, अभिषेक वार्ष्णेय एवं समस्त स्टाफ व छात्र छात्राएँ उपस्थित थे।

ईदुल अजहा की नमाज 7 को सुबह 7:15 पर

हाथरस–। मुस्लिम इन्तजामियाँ कमेटी की इत्तला के मुताबिक ईदुल अज़हा की नमाज़ ईदगाह कामरेड़ भगवानदास कामरेड मार्ग, मुरसान गेट पर 7 जून को सुबह 7.15 बजे अदा की जायेगी।उक्त जानकारी मुस्लिम इंतजामियां कमेटी के सदर राहत अहमद कुरैशी ने देते हुए कहा है कि लिहाजा आप हज़ात से दरख्वास्त है कि वक्त पर ईदगाँह पहुँच कर ईदुल अज़हा की नमाज़ अदा करें। ईदुल अज़हा की नमाज हाफिज इनाम द्वारा अदा करायी जायेगी।नमाज अदा करने के वास्ते साफ चादर व जानमाज़ साथ लायें।

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा संख्या, AGC-EL-C-T-01-2025-26 **दिनांक : 03.06.2025**

निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से उप मुख्य बिजली अभियंता/नि.-/उ.म.रे./आगरा द्वारा निर्धारित फार्म पर निम्नलिखित कार्य हेतु खुली निविदा ऑन लाइन ई-टेन्डरिंग द्वारा आमंत्रित करते है।

निविदा संख्याः AGC-EL-C-T-01-2025-26, **कार्य का नाम लोकेशन सहितः** उत्तर मध्य रेलवे के आगरा मंडल के DHO-SRMT सेक्शन के बीच गेज परिवर्तन N.G to B.G. कार्य के संबंध में **बारी-सरमथुरा (चरण-II)** सेक्शन के बीच विभिन्न स्थानों पर अंडर ग्राउंड एक्सएलपीई केबल द्वारा राज्य विद्युत बोर्ड के 33 केवी, 11 केवी, 440 वोल्ट विद्युत पावर लाइन, ओवर हेड क्रॉसिंग का संशोधन/परिवर्तन/स्थानांतरण का कार्य।

कार्य का अनुमानित लागतः ₹ 2,51,19,809.75/- **निविदा धरोहर राशिः** ₹ 2,75,600/-

कार्य समापन अवधिः स्वीकृति पत्र के जारी होने से 12 माह तक मानसून अवधि सहित

निविदा बन्द होने की तिथि एवं समयः 27.06.2025 के 15:00 बजे तक

वैधता अवधि : निविदा खोलने की तिथि से 60 दिन

निविदाएं केवल वेब पोर्टल **www.ireps.gov.in** के माध्यम से दिनांक **27.06.2025** के **15:00** बजे तक जमा की जा सकती है। **पूरी जानकारी के लिए कृपया भारतीय रेल की वेबसाइट www.ireps.gov.in** देखें। 974/25 (MG)

North central railways @ CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

उत्तर मध्य रेलवे

टेन्डर नोटिस नं.: 08/2025 **दिनांकः 03.06.2025**

ई-निविदा सूचना

वरि. मं. सिग. एवं दूर सं. इंजी., उत्तर मध्य रेलवे, आगरा भारत द्वारा राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य हेतु "खुली निविदा" केवल ऑनलाइन माध्यम द्वारा (ई-टेन्डरिंग) आमंत्रित की जाती है।

क्र.सं.: 1	**ई-निविदा सं.:** आगरा-एसटी-2025-20	**कार्य की लागतः** Rs. 1,18,01,996.92

कार्य का नामः फेलियर को न्यूनतम करने तथा MTJ-AWR और MTJ-AH अनुभाग में विश्वसनीयता में सुधार के लिए BPAC और UFSBI के लिए संचार को सुदृढ़ बनाने का कार्य।

क्र.सं.: 2	**ई-निविदा सं.:** आगरा-एसटी-2025-21	**कार्य की लागतः** Rs. 2,19,38,075.56

कार्य का नामः आगरा मंडल में सिग्नलिंग गियर्स का आधुनिकीकरण, उन्नयन, प्रतिस्थापन और सुदृढ़ीकरण का कार्य।

क्र.सं.: 3	**ई-निविदा सं.:** आगरा-एसटी-2025-22	**कार्य की लागतः** Rs. 2,03,15,594.42

कार्य का नामः आगरा मंडल पर विश्वसनीयता में सुधार के लिए आगरा कैंट स्टेशन पर दोषपूर्ण सिग्नलिंग केबलों को बदलने का कार्य।

क्र.सं.: 4	**ई-निविदा सं.:** आगरा-एसटी-2025-23	**कार्य की लागतः** Rs. 2,26,79,093.19

कार्य का नामः आगरा मंडल के नॉन इंटरलॉक्ड एलसी गेटों और अन्य संवेदनशील स्थानों पर सीसीटीवी के प्रावधान का कार्य।

निविदा बन्द दिनांकः 30.06.2025, निविदा की पूर्ण जानकारी एवं ऑनलाइन जमा करने हेतु कृपया भारतीय रेलवे की वेबसाइट **www.ireps.gov.in** का अवलोकन करे। निविदाकार अपनी निविदा उपरोक्त वर्णित दिनांक को **15:00 बजे** तक भारतीय रेलवे की वेबपोर्टल **www.ireps.gov.in** पर ऑनलाइन जमा कर सकते है। इस निविदा के अन्तर्गत मैनुअल निविदा स्वीकार नहीं की जायेगी एवं प्राप्त मैनुअल निविदाओं पर विचार नहीं किया जायेगा। 978/25 (ADM)

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @ CPRONCR

गंगा दशहरा: लाखों श्रद्धालुओं ने यमुना में लगाई आस्था की डुबकी, कमाया पुण्य

- मथुरा में गंगा दशहरा पर स्नान के लिए पहुंचे लाखों श्रद्धालु
- मथुरा- वृंदावन के मंदिरों में उमड़ी भक्तों की भीड़, किया दान- पुण्य
- पुलिस प्रशासन रहा सक्रिय, सुरक्षा के किए गए कड़े इंतजाम
- योगी सरकार द्वारा किए इंतजाम से संतुष्ट नजर आए श्रद्धालु

सांध्य पहल संवाददाता

मथुरा। गंगा महारानी के अवतरण दिवस गंगा दशहरा पर गुरुवार को यमुना में महास्नान के लिए आस्था का रेला उमड़ पड़ा। देश के विभिन्न राज्यों से आए लाखों श्रद्धालुओं ने यमुना में डुबकी लगाकर पुण्य की कामना की। महा स्नान के दौरान सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस प्रशासन व नगर निगम की टीमें निरंतर सक्रिय रहीं। श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए विशेष इंतजाम किए गए। घाटों पर बैरिकेडिंग की गई। साथ ही गोताखोरों की टीम तैनात की गई। गंगा दशहरा पर योगी सरकार द्वारा किए इंतजाम से श्रद्धालु संतुष्ट नजर आए। गंगा दशहरा पर होने वाले महास्नान के लिए सुबह पांच बजे से ही ऐतिहासिक विश्राम घाट पर आस्था का रेला उमड़ना शुरु हो गया था। इसके बाद धीरे-धीरे भीड़ का रेला बढ़ता चला गया। स्वामी घाट, असकुंडा, विश्राम घाट, सती घाट, प्रयाग घाट, राम घाट-श्याम घाट, दाऊजी घाट व बंगाली घाट तथा यमुना पार महास्नान के व्यापक प्रबंध किए गए थे। इन घाटों के साथ- साथ यमुना पार भी महास्नान के लिए भारी भीड़ उमड़ती रही। गंगा दशहरा से पूर्व यमुना के जल को स्वच्छ करने के प्रयासों का असर भी महास्नान के दौरान देखा गया। एक जून को हरिद्वार से यमुना में छोड़े गए गंगा जल की वजह से श्रद्धालुओं ने स्वच्छ जल को देखकर खूब गोते लगाए। गर्मी की अधिकता की वजह से दोपहर तक महास्नान के लिए भक्तों का रेला उमड़ता रहा। स्नान के दौरान नगर निगम व पुलिस प्रशासन की टीमें स्टीमर व नावों से निरंतर भ्रमणशील रहीं। गोताखोर भी स्नान करने वालों को यमुना में की गई बैरिकेडिंग से आगे न निकलने की चेतावनी देकर रोकते रहे, जिसके चलते महास्नान के दौरान किसी भी तरह के हादसे की संभावना को टालने में सफलता मिली। श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए पर्याप्त संख्या में पुरुष और महिला पुलिसकर्मी तैनात किए गए। नगर आयुक्त जग प्रवेश ने गंगा दशहरा पर नगर निगम द्वारा की गयी व्यवस्था का जायजा घाटों पर उपस्थित रहकर लिया गया। लाउडस्पीकर से लगातार अनाउंसमेंट कर श्रद्धालुओं को गहरे पानी में न जाने की अपील की गई। घाटों पर पर्याप्त सफाई व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, गोताखोर, महिलाओं के लिए चेंजिंग रूम, मोबाइल टॉयलेट, पानी व्यवस्था, मीठे शरबत की प्याऊ आदि व्यवस्था नगर निगम द्वारा की गयी। उन्होंने बताया कि नगर निगम द्वारा प्रतिवर्ष गंगा दशहरा के पर्व पर प्रमुख घाटों पर व्यवस्था उपलब्ध कराई जाती है, जिससे बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं से साथ साथ स्थानीय नागरिकों को किसी प्रकार की कोई असुविधा न हो। गंगा दशहरा पर इस बार एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं द्वारा यमुना में डुबकी लगाए जाने का अनुमान जताया गया। गंगा दशहरा मंदिर- देवालयों में भक्ति भाव से मनाया गया। सेवायतों ने आराध्य का विधि पूर्वक अभिषेक किया। मनोहारी श्रृंगार धारण कराया। पर्व के प्रसिद्ध जलेबी- कचौड़ी, तरबूज, खरबूज, शीतल शर्बत, आमरस आदि ठंडे भोग लगाए। बहुतेरे सेवकों ने प्रसाद भी वितरित किया।

जिम कार्बेट पब्लिक स्कूल ने वृक्षारोपण कर दिया पर्यावरण बचाने का संदेश

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। गैलाना रोड स्थित जिम कार्बेट पब्लिक स्कूल में ÷पर्यावरण दिवस÷ वृक्षारोपण किया गया। जिसके मुख्य अतिथि आईश ओश एफश एसश महेश चंद एवं जिम कार्बेट ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन के संस्थापक इंश आरश केश सिंह राघव एवं निर्देशिका डॉश मीना सिंह राघव ने भारत माता की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित एवं माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विद्यालय के संस्थापक इंश आरश केश सिंह राघव ने विद्यालय के खेल प्रांगण में वृक्षारोपण कर युवा पीढ़ी को संदेश दिया कि आज के समय में पर्यावरण असंतुलित हो गया है। बढ़ती आबादी, औद्योगीकरण, प्राकृति संसाधों के अंधाधुंध इस्तेमाल से आज विश्व का तापमान चिंतित स्तर पर बढ़ रहा है। जिससे ग्लेशियर पिघल के समुद्र में पानी बढ़ रहा है और बाढ़ आ रही है। हमे पर्यावरण को बचाने के लिए कोशिश करनी चाहिए। इसके लिए लोगों में पर्यावरण, प्रदुषण, जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस के प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग, ब्लैक होल इफ़ेक्ट आदि मुद्दों के बारे में लोगों को जागरूक करने की जरूरत है और प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करें, प्लास्टिक प्रयोग बंद करें, स्वस्थ शरीर के लिए साइकिल को अपनाएं। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए विद्युत शवदाह ग्रह अपनाए। इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रवीन कुलश्रेष्ठ, दीपक धाकरे, अजीत प्रताप सिंह, रामवीर परमार, रजनी कुलश्रेष्ठ, आशीष मंडल, दीपिका गौतम, रामवीर परमार, अरुण कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

आगामी त्योहारों को लेकर थाना अछनेरा पर आयोजित हुई बैठक

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। आगामी ईद-उल अजहा और अन्य त्योहारों को शांतिपूर्ण ओर सोहार्दपूर्ण वातावरण में मनाने लेकर बुधवार को अछनेरा थाना परिसर में पीस कमेटी की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता एसीपी अछनेरा गौरव सिंह ने की। बैठक में सहायक पुलिस आयुक्त गौरव सिंह ने कहा कि सभी समुदाय आपसी भाईचारे ओर सहयोग से त्योहारों को मनाएं। उन्होंने ईद-उल-अजहा के अवसर पर विशेष सतर्कता बरतने, कुर्नानी के अवशेषों को सही तरीके से निस्तारित करने और सफाई व्यवस्था बनाए रखने की अपील की। साथ ही उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की अफवाह पर ध्यान न दें ओर शांति व्यवस्था बनाए रखने में पुलिस का सहयोग करें। थाना प्रभारी निरीक्षक अछनेरा देवेंद्र द्विवेदी ने स्पष्ट किया कि कुर्बानी के दौरान किसी को असुविधा न हो, इसका विशेष ध्यान रखा जाएगा। उन्होंने चेतावनी दी कि शांति भंग करने या नई परंपरा शुरू करने की कोशिश करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी और लोगों को आह्वान किया कि किसी भी प्रकार कोई अफवाह या गलत सूचना पर ध्यान न दें। बैठक में एसीपी अछनेरा गौरव सिंह ने कहा कि सरकार की गाइड लाइन के अनुसार ईद की नमाज ईदगाह परिसर में ही अदा की जाए। सड़कों पर नमाज न पढ़ी जाए। साथ ही त्योहार पर बिजली ओर पानी की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित को जाए।बैठक के दौरान वरिष्ठ उपनिरीक्षक जितेंद्र कुमार सहित थाना क्षेत्र के अन्य ग्रामीण मौजूद रहे।

टंकी पर सेल्फी के लिए चढ़ा परिवार: बोला ऐसे फोटो लेती थी कि ताजमहल दिखे, नगर निगम लेगा एक्शन

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। ताजमहल के पास सेल्फी खींचने के लिए एक परिवार पानी की टंकी पर चढ़ गया। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। परिवार पानी की टंकी के ऊपर कैसे चढ़ा, इसकी जानकारी नगर निगम जुटा रहा है। क्योंकि, पानी की टंकी के पास ही सुरक्षा गार्ड भी तैनात है। यह पानी की टंकी ताजगंज क्षेत्र में पीले वाले स्कूल के पास है। यहां से ताजमहल साफ दिखाई देता है। माना जा रहा है कि जो परिवार पानी की टंकी पर चढ़ा, वो ताजमहल के साथ सेल्फी लेना चाहता था। वीडियो में छोटे छोटे बच्चे भी दिख रहे हैं।एक महिला और एक पुरुष भी हैं। पुरुष छोटे बच्चों का हाथ पकड़े है, वहीं महिला एकदम पानी की टंकी के टॉप पर बहुत आराम से घूम रही है।

किसी ने रोका क्यों नहीं

जिस पानी की टंकी पर पूरा परिवार चढ़ा था, वो घने बाजार में है। ऐसे में पूरे परिवार के पानी की टंकी पर चढ़ने के बाद यह सवाल खड़े हो रहे हैं कि आसपास किसी ने रोका क्यों नहीं टंकी की ऊंचाई 100 फीट के आसपास होगी, छोटे बच्चों के साथ ऊपर चढ़ने के क्या कारण हो सकते हैं परिवार जब नीचे उतरा और आसानी से चला गया ,तब भी किसी ने इसकी जानकारी नहीं ली।

नगरायुक्त ने लिया संज्ञान

इस वीडियो का नगरायुक्त ने संज्ञान लिया। नगरायुक्त अंकित खंडेलवाल का कहना है कि जानकारी कराई जा रही है कि परिवार ऊपर कैसे चढ़ा उस समय सुरक्षा गार्ड कहां था।

पथवारी माता के सार्वजनिक मंदिर पर क़ब्ज़े का प्रयास: सेवादारों की शिकायत पर पुलिस ने काम रुकवाया

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। खन्दारी मऊ रोड़ स्थित सिद्धार्थ एंक्लेव में पथवारी माता का सार्वजनिक मंदिर स्थापित है। मंदिर पर सर्व समाज के लोग लम्बे समय से पूजा-पाठ करते आ रहे हैं। बुधवार को मंदिर को अपनी निजी संपत्ति होने का दावा करते हुए दलित समाज के लोगों ने देर शाम मंदिर परिसर के बीचोंबीच निर्माण कार्य शुरू करा दिया। सेवादारों के मना करने पर उग्र होने लगे। मामले की सूचना मंदिर के सेवादारों ने तत्काल थाना न्यू आगरा पुलिस को दी। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर रातोंरात कराए जा रहे निर्माण कार्य को रुकवा दिया और मंदिर को अपनी निजी संपत्ति होने का दावा करने वाले दलित पक्ष को संपति से संबंधित पत्रावली लेकर आने को कहा। मौके पर पहुंचे दयालबाग चौकी प्रभारी जागेश्वर सिंह ने अराजक तत्वों को चेतावनी देते हुए स्पष्ट किया कि वे माहौल खराब करने वाले तत्वों को बख्शेंगे नहीं, कठोर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने दोनों पक्षों से पत्रावली के साथ अधिकारियों के समक्ष अपना अपना पक्ष प्रस्तुत करने को कहा।

विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण कर ली स्वच्छता की सपथ

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। विश्व पर्यावरण दिवस पर दयालबाग क्षेत्र की कालोनी जीवन ज्योति में पर्यावरण प्रेमियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया। छोटे छोटे बच्चों ने जल संरक्षण व सोलर एनर्जी आदि विषयों पर अपनी बात प्रोजेक्ट के माध्यम से रखी, जो पौधे लगाए गए उसकी देखरेख की जिम्मेदारी भी बच्चो ने ली। इस दौरान सभी ने स्वक्षता की शपथ भी ली। कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित पार्षद भरत शर्मा ने पर्यावरण का महत्व बताया और कार्यक्रम की सराहना करते हुए आयोजकों को बधाई दी। हरीपर्वत जोन के जेड ओ अवधेश कुमार एसएफआई चंद्रपाल सफाई नायक राहुल बघेल मनीष पॉल शिवाय पचौरी आदि ने वृहद रूप से वृक्षारोपण किया और सभी ने संयुक्त रूप से स्वच्छता की सपथ ली।

महिला से मारपीट, जान से मारने की धमकी; दो नामजद आरोपियों पर मामला दर्ज

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। थाना किरावली क्षेत्र के अंतर्गत गांव सगुनापुर में एक महिला के साथ मारपीट और जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। पीड़िता के पति की शिकायत पर पुलिस ने दो नामजद आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है।

घर में अकेली थी महिला, तभी हुआ हमला

शिकायतकर्ता हुकम सिंह पुत्र मुन्ना लाल ने थाने पर दी तहरीर के अनुसार बताया कि बुधवार को उनकी पत्नी सरोज देवी घर पर अकेली थीं। इसी दौरान, गांव के ही निवासी मुन्ना लाल पुत्र सहाब सिंह और उसका बेटा हरेंद्र उर्फ पप्पू उनके घर पहुंचे। बिना किसी स्पष्ट कारण के, दोनों आरोपियों ने उनकी पत्नी सरोज देवी के साथ मारपीट शुरू कर दी।

शोर सुनकर पड़ोसी आए, आरोपियों ने दी धमकी

मारपीट के दौरान सरोज देवी के शोर मचाने पर पड़ोसी मौके पर इकट्ठा हो गए। पड़ोसियों को आता देख, आरोपी मुन्ना लाल और हरेंद्र उर्फ पप्पू, सरोज देवी और उनके परिवार को जान से मारने की धमकी देते हुए मौके से फरार हो गए।इंस्पेक्टर किरावली केवल सिंह ने बताया कि पीड़ित की तहरीर के आधार पर मुन्ना लाल और हरेंद्र उर्फ पप्पू के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस मामले की गहराई से जांच कर रही है और जल्द ही आरोपियों के खिलाफ आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस घटना से गांव में तनाव का माहौल है।

सावधान: भिक्षा मांगने वाले बाबा लूट रहे गल्ला, फतेहाबाद में भीड़ ने दो दबोचे

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। जनपद सावधान हो जाइए, जिले में भभूत और चंदन लगाए बाबाओं के भेष में कुछ उचक्के भी घूम रहे हैं। ऐसे ही दो बाबाओं को गुरुवार की सुबह फतेहाबाद में पकड़ा गया। इसमें से एक बाबा ने एक दुकान से भिक्षा मांगने के दौरान गल्ला लूट लिया। भागते समय क्षेत्रीय लोगों ने बाबा और उसके साथी को पकड़ लिया। सूचना पर थाना फतेहाबाद पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों बाबाओं पकड़ कर ले गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार, फतेहाबाद बाह रोड बाईपास पर रिया कॉस्मेटिक सेंटर नामक दुकान है। सुबह दुकान संचालक यशपाल चौहान का पुत्र दुकान पर बैठा था। भिक्षा मांगता हुआ एक बाबा वहां आया तो यशपाल के बेटे ने गल्ले से निकालकर उसे दस रुपये दे दिए। इस दौरान बाबा ने गल्ले में रखे अन्य रुपये देख लिए और उसके मन में लालच आ गया। और बाबा ने दुकान संचालक के बेटे के दोनों हाथ मरोड़ दिए और गल्ले में रखे करीब चार हजार रुपये लेकर भागने लगा। इस पर यशपाल चौहान के बेटे ने दुकान से बाहर निकल कर शोर मचा दिया। शोर सुनकर राहगीरों ने भागते बाबा और उसके एक साथी को दबोच लिया। भीड़ ने दोनों की जमकर पिटाई लगा दी। सूचना मिलते ही थाना फतेहाबाद पुलिस भी मौके पर पहुंच गई और दोनों बाबाओं को पकड़ कर थाने ले गई। पुलिस के अनुसार पकड़े गए दोनों बाबाओं ने अपना नाम उमेश नाथ और रामनाथ दिलावर बताया है और दोनों जिला औरैया के निवासी हैं। उनकी पिटाई का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

पथौली रोड हत्याकांड का पर्दाफाश : मुठभेड़ में पुलिस की गोली से घायल हुआ आरोपी सोहेल

एक दिन पहले पथौली रोड पर हर्षित नामक युवक ही हत्या का जुर्म कबूला

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। पथौली रोड पर हुए सनसनीखेज हत्याकांड के आरोपी को शाहगंज पुलिस ने मंगलवार देर रात मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया। आरोपी की पहचान सोहेल के रूप में हुई है, जो घटना को अंजाम देने के बाद फरार था और लगातार ठिकाने बदलकर छिपने की कोशिश कर रहा था। मुठभेड़ के दौरान पुलिस की जवाबी कार्रवाई में सोहेल के पैर में गोली लगी, जिसके बाद उसे गिरफ्तार कर इलाज के लिए एसएन मेडिकल कॉलेज भेजा गया है। थाना शाहगंज क्षेत्र के वायु विहार के सामने पुलिस देर रात संदिग्ध वाहनों की चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान एक स्कूटी सवार युवक तेजी से आता दिखाई दिया। पुलिस ने जब उसे रुकने का इशारा किया तो उसने रुकने के बजाय स्कूटी की गति तेज कर दी और भागने लगा। थाना प्रभारी वीरेश पाल गिरी ने फोर्स के साथ उसका पीछा किया। आरोपी स्कूटी लेकर पथौली से पहले एक लिंक रोड की तरफ मुड़ गया। घबराहट में वह स्कूटी से फिसलकर गिर पड़ा। तभी उसने पुलिस को पास आता देख फायरिंग कर दी। पुलिस ने आत्मरक्षा में जवाबी फायर किया, जिसमें एक गोली आरोपी के बाएं पैर में जा लगी। घायल होने के बाद पुलिस ने उसे मौके पर ही दबोच लिया। तत्काल प्रभाव से उसे एसएन मेडिकल कॉलेज भेजा गया, जहां उसका इलाज चल रहा है।

कबूला हत्या का जुर्म

पुलिस पूछताछ में घायल आरोपी ने अपना नाम सोहेल निवासी आगरा बताया। उसने कबूल किया कि उसने एक दिन पहले ही हर्षित नामक युवक की बेरहमी से हत्या की थी। हर्षित का शव पथौली रोड स्थित किरन कॉलोनी में लहूलुहान अवस्था में बरामद हुआ था। सोहेल के पास से वह स्कूटी बरामद की गई है जिसका प्रयोग हत्या के बाद भागने में किया गया। इसके अलावा पुलिस ने उसके पास से एक तमंचा और जिंदा कारतूस भी बरामद किए हैं। पुलिस का मानना है कि यह हथियार हत्या में भी प्रयुक्त हुआ हो सकता है।

कानूनी कार्रवाई जारी

पुलिस आरोपी सोहेल के खिलाफ हत्या, पुलिस पर हमला, अवैध हथियार रखने और सार्वजनिक सुरक्षा को खतरे में डालने की धाराओं में मामला दर्ज कर रही है। इलाज के बाद उसे कोर्ट में पेश किया जाएगा। साथ ही यह भी जांच की जा रही है कि हत्या के पीछे क्या मकसद था, पुरानी रंजिश, पैसे का विवाद या अन्य कोई कारण।

एसीपी लोहामंडी मयंक तिवारी ने बताया कि सोहेल बेहद शातिर किस्म का अपराधी है। उसने पुलिस पर भी जानलेवा हमला किया लेकिन हमारी टीम ने सतर्कता और संयम से काम लिया। समय रहते उसे पकड़ लिया गया जिससे बड़ा खतरा टल गया।

हार जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलने वाले नो जुआरियों को थाना मंटोला पुलिस ने किया गिरफ्तार

सांध्य पहल संवाददाता

आगरा। ताश के पत्तों से हार जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलने वाले नो अभियुक्तों को थाना मंटोला पुलिस टीम द्वारा किया गिरफ्तार। पुलिस आयुक्त, आगरा दीपक कुमार के निर्देशन व पुलिस उपायुक्त, नगर सोनम कुमार के पर्यवेक्षण में अपराध और अपराधियों पर अंकुश लगाने के दृष्टिगत पुलिस बल द्वारा अपने अपने क्षेत्र लगातार संदिग्ध व्यक्ति/वाहन की चेकिंग एवं गस्त की जा रही है। पांच जून को थाना मंटोला पुलिस टीम द्वारा थाना क्षेत्रांतर्गत गश्त/चैकिंग की जा रही थी, इसी दौरान मोहल्ला राधा बल्लभ की बगीची मे खुले मे ताश के पत्तों से हार जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलने वाले 09 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार अभियुक्तों के कब्जे से 10,570/ रुपए, 52 ताश के पत्ते बरामद हुये।पुलिस ने पकड़े गए जुआरियों के विरुद्ध धारा 13 जुआ अधिनियम के तहत कार्रवाई की हैं।

पकड़े गए जुआरियों की पहचान

01. शिवकुमार पुत्र राजू निवासी राधा बल्लभ की बगीची थाना मंटोला कमि0 आगरा।

02. हेमंत पुत्र धनीराम निवासी ग्राम साथा तहसील महुबा जनपद दौसा राजस्थान

03. अजय पुत्र पप्पू निवासी राधा बल्लभ की बगीची थाना मंटोला जनपद आगरा।

04. भूदेव पुत्र मुंशी निवासी राधा बल्लभ की बगीची थाना मंटोला जनपद आगरा।

05. जितेन्द्र पुत्र पूरन सिहं निवासी राधा बल्लभ की बगीची थाना मंटोला जनपद आगरा ।

06. आशीष पुत्र पप्पू उर्फ ओमप्रकाश निवासी राधा बल्लभ की बगीची थाना मंटोला जनपद आगरा।

07. प्रशांत पुत्र गौरीशंकर निवासी राधा बल्लभ की बगीची थाना मंटोला जनपद आगरा ।

08. राहुल सिंह पुत्र पप्पू सिंह निवासी राधा बल्लभ की बगीची थाना मंटोला जनपद आगरा।

09. दिलीप कुमार पुत्र दौलत राम निवासी ग्राम श्रीनगर थाना हसायन तहसील सिकन्द्रऊ जनपद हाथरस हाल निवासी किशन गोपाल के मकान में किराये पर राधा बल्लभ की बगीची थाना मंटोला आगरा के रूप में बताई है।

जुआरियों पर कार्रवाई करने वाली पुलिस टीम में शामिल अधिकारी

टीम में थाना प्रभारी निरीक्षक मंटोला सत्यदेव शर्मा, प्रशिक्षु उपनिरीक्षक शुभम चौधरी व अभय बैनिवाल,व अक्षय कुमार, व आशीष कुमार, व नितिन भारद्वाज व धीरय यादव, हेड कास्टेबल मुकेश कुमार, कास्टेबल आकाश हुडडा शामिल रहे।

प्लास्टिक प्रदूषण को मात दें थीम के साथ वृक्षारोपण किया

हाथरस। विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस को ÷प्लास्टिक प्रदूषण को मात दें÷ थीम के साथ सेलिब्रेट किया जा रहा है। इस दिन को मनाने के लिए वैश्विक मेजबानी द रिपब्लिक ऑफ कोरिया को प्रदान की गई है इस देश को दूसरी बार मेजबानी मिली है। एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक ह्यूमन राइट्स द्वारा प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जन्म दिवस, गंगा दशहरा के पावन पर्व,पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण का कार्यक्रम मण्डी समिति स्थित एडीएचआर कार्यालय पर किया गया नगर पालिका अध्यक्ष श्वेता चौधरी ने वृक्षारोपण करते हुए कहा कि आज बहुत ही पावन पर्व है प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जन्म दिवस, गंगा दशहरा के पावन पर्व एवं पर्यावरण दिवस पर एडीएचआर द्वारा वृक्ष लगाने का जो पुनीत कार्य किया है ऐसे कार्यों के लिए एडीएचआर की पूरी टीम को बहुत बहुत साधुवाद देती हूं वृक्ष लगाना समय की बहुत बडी आवश्यकता है।

भाजपाइयों ने मनाया योगी का जन्मदिन

हाथरस। उत्तर प्रदेश के यशस्वी लोकप्रिय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का जन्मदिन शहर अध्यक्ष मूलचंद वार्ष्णेय के नेतृत्व में बड़े ही धूमधाम के साथ मनाया गया व केक काटकर और आतिशबाजी की एवं मिष्ठान वितरित किया,इस अवसर पर निवर्तमान जिला अध्यक्ष गौरव आर्य ने कहा योगी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश उत्तम प्रदेश बन चुका है गुंडे माफियाओं और अपराधियों ने या तो प्रदेश छोड़ दिया है या फिर वह जेल के अंदर है द्य शहर अध्यक्ष मूलचंद वार्ष्णेय ने पार्टी के पदाधिकारी कार्यकर्ताओं का दिल से आभार प्रकट कर धन्यवाद दिया द्य जन्मदिन मनाने वालों में निवर्तमान जिला अध्यक्ष गौरव आर्य रामकुमार वर्मा, सुनीता वर्मा, विष्णु बघेल, विशाल गुप्ता, अशोक कुमार, सुरेश चौधरी सभासद, रजत अग्रवाल, नरेंद्र ग्रोवर, मोहन पंडित, अंकितगौड़, जितेंद्र प्रधान, ध्रुव शर्मा, बंसी पंडित, हैप्पी अत्रेय, सूरज कुमार, मनीष कुशवाहा, विनोद शास्त्री, शिवम कुलश्रेष्ठ, रमेश राजपूत, रामवीर सिंह भैया , दिलीप चौधरी, दाऊ दयाल सक्सेना प्रेम शंकर सक्सेना रितु गौतम, विस्सो लाला नमक वाले, सतीश चंद आदि कार्यकर्ता मौजूद थे।

संपादकीय

सहमति से बने संबंधों में खटास

सहमति से बने रिश्तों में खटास आना या प्रेमी जोड़े के बीच दूरियां बन जाना आपराधिक प्रक्रिया शुरू करने का आधार नहीं हो सकता। सुप्रीम कोर्ट ने महाराष्ट्र के एक शख्स के खिलाफ दर्ज आपराधिक मामले को खारिज करते यह टिप्पणी की, जिस पर आरोप था कि शादी का झूठा वादा कर उसने महिला से बलात्कार किया। अदालत ने कहा, रिकॉर्ड से ऐसा नहीं लगता कि शिकायतकर्ता की सहमति, उसकी इच्छा के विरुद्ध शादी करने के वादे पर की गयी थी। पीठ ने कहा यह ऐसा मामला नहीं है, जिसमें शुरुआत में शादी करने का वादा किया गया हो। सहमति से बने संबंधों में खटास आना या पार्टनर के बीच दूरी आना, आपराधिक प्रक्रिया शुरू करने का आधार नहीं हो सकता। मामले के अनुसार जून 2022 से जुलाई 2023 के दौरान आरोपी ने शादी का झूठा वादा कर उसके साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाए। आरोपी ने इनसे इनकार किया और निचली अदालत में जमानत के लिए अपील की। हालांकि भारतीय न्याय संहिता की धारा 69 के तहत अपराध है, जिसके लिए दस साल तक की सजा व जुर्माना हो सकता है। मगर इस तरह के मामलों में अदालत साक्ष्यों व भावनाओं की अनदेखी नहीं करती। भले ही यह सरासर धोखा है मगर सच तो यह भी है कि वयस्क महिलाओं द्वारा विवाहपूर्व शारीरिक संबंध बनाने की सहमति प्रेम व समर्पण के रूप में दी जाती है। वास्तव में विवाहोपरांत भी रिश्तों में खटास आती है, मगर ऐसे में विवाह विच्छेदन जैसी सुविधाएं हैं, परंतु बगैर वैवाहिक रस्मों, परिवार या परिचितों के संज्ञान में लाये बगैर, गुपचुप बनाए गए इस संबंध में धोखे की गुंजाइश तलाशना बेहद मुश्किल होता है। यह भी कहना अतिश्योक्ति होगी कि धोखे से या फुसलाकर महिलाओं को दैहिक संबंधों के लिए राजी करने वाले पुरुषों की मंशा में शुरू से ही खोट नहीं होता। झूठे वादों, दिखावे या सच्चे प्रेम को परखने की कोई कसौटी नहीं होती। न ही सहमति से सेक्स करने के नतीजतन विवाह अनिवार्य हो सकता है। विवाह पवित्र बंधन ही नहीं है, सामाजिक व पारिवारिक व्यवस्था में अभी भी विवाहित जोड़ों को इज्जत से देखा जाता है। दूसरे; तमाम खुलेपन के बावजूद स्त्री शुचिता को लेकर चले आ रहे पूर्वाग्रह कमजोर पड़ते नहीं नजर आ रहे। जिनका समूचा खामियाजा अंततः स्त्री को ही भुगतना पड़ता है। नैतिकता ही नहीं, कानूनी पाबंदियों का भी ख्याल करते हुए पुरुषों को अपनी उतावली व भावनाओं पर काबू करना सीखना चाहिए।

स्वदेशी बुद्धि का नया स्वाभिमानी कदम हमारा अपना भारत जेन

(विवेक रंजन श्रीवास्तव-विभूति फीचर्स)

एक समय था जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) सिर्फ फिल्मों में नजर आती थी, वह भी अंग्रेज़ी में, चमकते-दमकते रोबोटों के साथ। लेकिन अब वक्त बदल गया है। अब भारत न केवल बाज़ार है, बल्कि मस्तिष्क भी है। और इस मस्तिष्क का नवीनतम चमत्कार है - 'भारतजेन'। यह मॉडल सिर्फ स्मार्ट उत्तर नहीं देगा, बल्कि स्थानीय ज़रूरतों के अनुसार जवाब देगा–चाहे बात किसानों की हो, शिक्षकों की हो या किसी ग्रामीण डॉक्टर की। यह स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और शासन जैसे क्षेत्रों में भारतीय संदर्भों के अनुरूप सेवा देगा। जिस देश की गली-गली में भाषाएं बदल जाती हैं, वहाँ एकल भाषा पर टिका एआई अनुपयुक्त होता। भारतजेन जैसे मॉडलों का आना भाषाई लोकतंत्र का तकनीकी संस्करण है। एक तरह से यह हमारी तकनीकी ए आई आज़ादी की उद्घोषणा है। यह प्रोजेक्ट न सिर्फ़ तकनीक का विकास है, बल्कि यह घोषणा है कि भारत अब सिर्फ़ उपभोक्ता नहीं, ए आई निर्माता भी है। भारतजेन की सफलता इस बात पर भी निर्भर करेगी कि हम इसे सिर्फ़ एक प्रयोग न समझें, बल्कि इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। जब छात्र अपनी मातृभाषा में पढ़ाई के लिए भारतजेन का सहारा ले सकेंगे, जब किसान अपने स्थानीय बोली में इससे संवाद कर पाएंगे, तब असल मायने में यह एआई "हमारा" होगा। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की दुनिया में भारतजेन एक सांस्कृतिक पहरूआ भी होगा। आप पूछ सकते हैं "का हाल बा भैया?" और ए आई भारतजेन जवाब देगा"सब ठीके बा!" भारतजेन केवल एक तकनीकी उपलब्धि नहीं है, यह राष्ट्रबोध का विस्तार है। यह उन असंख्य भारतीयों की आकांक्षा है, जो तकनीक में अपनी भाषा, अपनी पहचान और अपना सम्मान चाहते हैं। यह भारत का एआई नहीं, भारत की आत्मा का आईना है। यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए आई) है, जो आपकी भाषा समझे, आपके मुहावरों में जवाब दे, आपके स्थानीय संदर्भों को पहचानकर समाधान सुझाए, और वह भी बिना किसी विदेशी सर्वर या मॉडल पर निर्भर हुए। यह अब कल्पना नहीं रही। 'भारतजेन' के रूप में यह एक जाग्रत वास्तविकता बन चुकी है। डॉ. जितेन्द्र सिंह, केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री द्वारा 3 जून 2025 को लॉन्च किया गया 'भारतजेन' भारत का पहला स्वदेशी मल्टीमॉडल ए आई भाषा मॉडल है, जो 22 भारतीय भाषाओं में संवाद कर सकता है। यह केवल एक तकनीकी उत्पाद नहीं है, बल्कि भारत के तकनीकी आत्मनिर्भरता अभियान'आत्मनिर्भर भारत' का क्रांतिकारी प्रतीक है।

तकनीकी तथ्य....

भारतजेन की बनावट और क्षमता

मल्टीमॉडल एआई मॉडल..

भारतजेन टेक्स्ट, स्पीच और इमेज प्रोसेसिंग में सक्षम है।

यह नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) और कंप्यूटर विज़न को एकीकृत करता है ।

बाइस भारतीय भाषाओं का ज्ञान भारतजेन हिंदी, तमिल, तेलुगु, बांग्ला, मराठी, पंजाबी, उर्दू, कन्नड़, गुजराती, मलयालम समेत कुल 22 संविधानिक भाषाओं में काम करने की क्षमता रखता है। यह मॉडल भारतीय भाषाओं के कोड-मिक्सिंग, भाषायी विविधता, और बोलचाल की स्थानीय शैली को भी समझने और अपनाने में सक्षम है।

निजता और डेटा संप्रभुता..

भारतजेन का डेटा संसाधन भारत में ही रहता है। यह भारत सरकार के साइबर फिजिकल सिस्टम्स मिशन के तहत विकसित हुआ है, जिससे डेटा की निजता और संप्रभुता बनी रहती है।

प्रौद्योगिकी भागीदार..

इसे IIT बॉम्बे, IIT मद्रास, IIT दिल्ली तथा IISc बेंगलुरु जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के सहयोग से विकसित किया गया है।। इसके पीछे कार्यरत संगठन है AICTE, नेशनल मिशन ऑन साइबर फिजिकल सिस्टम्स, और टेक्नोलॉजी इनोवेशन हब्स भारतजेन परियोजना समन्वयक हैं।

क्यों विशिष्ट है भारतजेन?

स्थानिक संवेदनशीलता (Regional Sensitivit4)-भारतजेन विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक और भाषाई आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निर्णय देता है।

यह किसान को मौसम की जानकारी उसकी बोली में दे सकता है, शिक्षक को पाठ योजनाएँ उसकी भाषा में बना सकता है। शहरी ही नहीं, यह मॉडल ग्रामीण भारत की समस्याओं को भी प्राथमिकता देता है। यह मॉडल छोटे अस्पतालों को टेलीमेडिसिन, किसानों को मौसम और बाजार सलाह, छात्रों को स्थानीय भाषा में शिक्षा देने में मदद करेगा।

शब्द सामर्थ्य -070

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. बात, घटना, माजरा, मुकदमा (उर्दू) 3. अलावा, अतिरिक्त 6. प्रेम, इच्छा 7. मां का बच्चे के प्रति प्रेम 8. गलती, जुर्म, गुनाह, दोष 10. मग्न, लीन, खुश, प्रसन्न 12. धनुष, समादेश, फौजी टुकड़ी 13. एक कल्पित पत्थर जो लोहे को छूकर सोना बना देता है 16. हिम्मत, साहस, सामर्थ्य 17. बनावटी, अनुकृति, असली का विलोम 18. अबोध, नासमझ 20. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध हरिभक्त देवर्षि 22. गहरा नीला, काला 23. व्याकुल, बेसब्र 24. मन, चित्त, आदरसूचक तथा सहमति सूचक एक शब्द।

ऊपर से नीचे

1. स्वामी, नाथ 2. बेबस, मजबूर, विवश 3. अन्याय, अत्याचार, जुल्म 4. मध्य एशिया का एक देश 5. पुस्तक 9. बहादुर, वीर 11. सैनिक विद्रोह 12. नीच, अधम 12 ए. प्रणाम, झुकना 13. भरण-पोषण करना, परवरिश करना, छोटा झूला, हिंडोला 14. प्रमाण, प्रमाणिक कथन 15. स्वाभाविक ढंक, योग्यता, लियाकत, सभ्यता और शिष्टता, शऊर (उ.) 19. बिजली, तड़ित 21. रात में दिखाई न पड़ने का नेत्र संबंधी रोग।

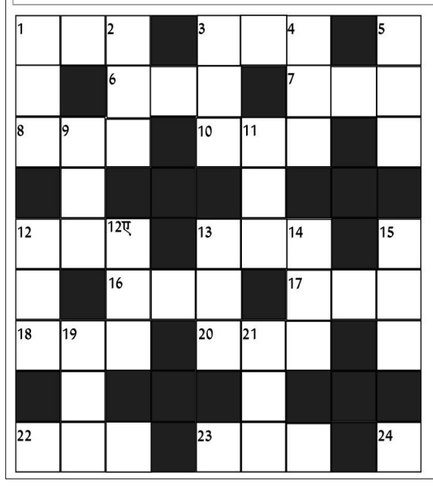

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 069 का हल

प	सं	द	■	सिं	हा	स	न	■
ख	■	म	ज	दू	र	■	का	म
वा	द	क	■	र	■	सं	ब	ल
ड़	■	ल	ज्जा	■	म	स्का	■	य
■	बा	■	■	बि	हा	र	■	■
सु	धा	क	र	■	न	■	■	औ
रं	■	म	■	कि	ता	ब	■	स
ग	■	अ	र	सा	■	हु	ज्ज	त
■	श	क्ल	■	न	मि	त	■	न

सू- दोकू क्र.070

	2			6			1	
3			4			2		
							6	
6					4			
	9		5			6		1
4		3			9			2
	8		2				7	
1		2		4		9		6

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.069 का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2
9	4	1	6	2	8	3	7	5
7	2	8	5	1	3	6	4	9
5	6	3	7	4	9	8	2	1

राशिफल

मेष

आज का दिन आपके लिए सुनहरा रहने वाला है। आप माता-पिता के साथ धार्मिक स्थल पर जायेंगे। घर में नए मेहमान के आने की संभावना है, जिससे परिवार का माहौल खुशनुमा बन जायेगा। किसी काम में की गई मेहनत जरूर सफल होगी। आज व्यापार के सिलसिले में की गई यात्रा आज फायदेमंद रहेगी। अगर आप बिजनेस में अनुभवी लोगों की सलाह लेकर आगे बढ़ेंगे, तो आपको अधिक मुनाफा होगा। जीवनसाथी का सहयोग मिलने से आपका मन उत्साह से भरा रहेगा।

वृषभ

आज का दिन आपके लिए खुशियां लेकर आया है। इस राशि के स्टूडेंट्स का दिन राहत भरा होगा नया शेड्यूल बनाने का भी विचार कर सकते हैं। आज आप किसी व्यक्ति की मदद करेंगे, आपको ऐसा कर के अच्छा लगेगा। आज किसी बचपन के मित्र से आपकी मुलाकात हो सकती है, आप पुरानी बातों पर चर्चा करेंगे। आज कहीं घूमने की योजना बना सकते हैं, जिससे मन प्रसन्न रहेगा। आज कारोबार में कुछ नया और अच्छा करने का मन करेगा। सामाजिक कार्यों में कार्यरत व्यक्तियों को आज प्रोत्साहन मिलेगा , जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

मिथुन

आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहने वाला है। कार्यक्षेत्र में आ रही रुकावटों का रास्ता आज ढूंढ लेंगे। आप अपनी ऊर्जा को अच्छे कामों में लगायेंगे। आज आपको परिवार के किसी सदस्य की सेहत को लेकर चिंता रहेगी। उनकी सेहत और परिवार का ध्यान रखना आपकी जिम्मेदारी है। बच्चों के लिए आज का दिन बढ़िया है। आपको कोई बड़ा ऑफर मिलने से धन लाभ होगा। किसी खास काम के लिए परिवार के लोगों को आपसे उम्मीद होगी, जिसे आप बखूबी पूरा करेंगे। बाहर के ऑयली खाने से परहेज करेंगे।

कर्क

आज आपका दिन आपके लिए खुशियों की नई सौगात लाया है। जीवनसाथी की बेहतर सलाह से आपको पैसे कमाने का नया जरिया प्राप्त होगा। आज अपनी काबिलियत पर भरोसा रखकर आगे बढ़ेंगे तो भविष्य में आपकी सफलता के अवसर बढ़ जायेंगे। कोई भी महत्वपूर्ण फैसला लेने में सहजता रहेगी। आज दोपहर बाद थोड़ा समय आराम करने और कलात्मक कामों में बीतेगा। खुद को मानसिक रूप से फिट रखने के लिये आपको योगा करना चाहिए। साथ ही आज जल्दबाजी में कोई फैसला करने से आप बचेंगे।

सिंह

आज का दिन आपके लिए फेवरेबल रहने वाला है। आज कोई बड़ा और अलग काम करने की सोच सकते है। आज आपका दिन भक्तिमय रहेगा। आज के दिन आपके लिये कमियों से सीख लेकर आगे बढ़ने का है। ऐसा करने से आप उपलब्धि हासिल कर सकते हैं। प्रतिष्ठित लोगों से फायदेमंद मुलाकात रहेगी। आज अपने निजी मामलों में किसी की दखलअंदाजी न होने दें। मीडिया और लोगों से जुड़े रहने से आपको फायदा होगा। पैसों के मामलों में लोगों पर जरूरत से ज्यादा भरोसा करने से बचना चाहिए। किसी को उधार पैसा देने में सोच-विचार करना बेहतर रहेगा।

कन्या

आज का दिन आपको रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे। आज आप का दिन नई उमंगो के साथ शुरू होने वाला है। आज यात्रा से आपको अपने परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। आज आपकी परिस्थितियों में बदलाव होगा। थोड़ा समय परिवार वालों के साथ बीताने और बातचीत करने से किसी खास मुद्दे का समाधान निकलेगा। भाइयों और रिश्तेदारों के बीच चल रहे विवाद किसी से निपट सकते हैं। समझपूर्ण व्यवहार से आप परिवार की एकता को बरकार रखने में कामयाब होंगे। आपका सकारात्मक रवैया और पक्का आत्मविश्वास आपको आर्थिक सफलता की ओर ले जायेगा।

तुला

आज आपका दिन बहुत बढ़िया रहने वाला हैं। समय का पूरा सदुपयोग करें। आज दूसरों को जितना ज्यादा महत्व देंगे, आपको भी उतना ही महत्व मिलेगा। आज पुश्तैनी जमीन-जायदाद से जुड़ा काम सुलझ सकता है। आज आपके घर में मांगलिक कामों की योजनाएं बनेंगी। संबंधों में मजबूती आएगी। आपका रुका हुआ सरकारी काम आज पूरा हो सकता है। आज आप अपने घर को नए तरीके से सजायेंगे। लम्बे समय से चल रही योजना में आज कुछ नए चेंजेस भी कर सकते हैं। समाज में आपके द्वारा किए गए कार्यों की काफी सराहना होगी।

वृश्चिक

आज आप का दिन नई उमंगो के साथ शुरू होने वाला है। माताएं अपने बच्चों को कुछ नया सिखाएंगी, जिससे बच्चों में नए विचार आएंगे। आज परिवार के कुछ जरूरी काम होंगे। आज किसी से फोन पर लम्बी बात हो सकती है। इससे रिश्ते और मजबूत होंगे। रूटीन में सुधार करने की जरूरत है। व्यवस्थित रहेंगे तो आज काम समय पर पूरे हो जाएंगे। शाम का समय आपका खुशी व उमंग से भरा रहेगा।

धनु

आज आपके दिन की शुरुआत आपके अनुकूल होने वाली है। आज आप वर्किंग प्लेस पर खूब मेहनत करेंगे आपको कई जिम्मेदारियां मिल सकती है, जिन्हें आप अच्छी तरह से निभायेंगे। इस राशि के मनोरंजन उद्योग से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन फायदेमंद होगा। आपके घर में उत्सव का माहौल बना रहेगा। जो लोग पैतृक व्यवसाय कर रहे हैं व्यवसाय में कुछ बदलाव के लिए अपने पिताजी से बातचीत करेंगे। व्यापारिक दृष्टि से आपको लाभ होगा, धीरे – धीरे व्यापार में अच्छा लाभ देखने को मिलेगा।

मकर

आज आपका दिन खुशनुमा बना रहेगा। कार्यक्षेत्र में जो भी रुकावटें आएंगी, उनसे आप कुछ सीख सकते हैं, ऐसे ही आपको आगे बढ़ने के नए मौके मिलेंगे। बिजनेस में अच्छे से काम को करने पर आपको फायदा होगा। कारोबार में कुछ नया करने के लिए चल रहे प्रयास सफल होंगे। दूसरों की मदद करने से आपको फायदा होगा। ज़मीन जायजाद के मामले में लाभ मिलेगा। आज जमीन जायदाद से जुड़े काम निपट जायेंगे। साझेदार की गतिविधियों पर ध्यान देंगे। आज ऑफिस में बॉस आपके काम की तारीफ करेंगें , आपका प्रभोशन भी हो सकता है।

कुंभ

आज आपका दिन बढ़िया गुजरेगा। किसी काम को पूरा करने के लिए शार्टकट तरीके अपनाने से बचें। निश्चित ही काम थोड़े विलम्ब से ही लेकिन पूरे हो जाएंगे। इस राशि के बिजनेसमैन के बिजनेस में बढ़ोतरी होगी। माताएं बच्चो को मोरल स्टोरी सुनाएंगी। काम को पूरा करने में मन लगायेंगे और कुछ क्रिएटिव वर्क करने का प्रयास करेंगे। आपके लिए आज का दिन अच्छा है । आपके पुत्र के करियर से रिलेटेड कोई अच्छी खबर सुनने को मिल सकती है। आज आप अपने पैशन के माध्यम से महिलाओं को रोजगार देने का प्रयास करेंगें।

मीन

आज आपका दिन फेवरेबल रहेगा। ऑफिस में आज का दिन ठीक रहेगा,..साथ ही कोई कलीग आपके काम में हेल्प करेंगे। आज किसी के बहकावे में न आये और अपने काम के प्रति सतर्क रहें। आपके परिवार में कोई नन्हा मेहमान आने के योग बन रहे है। आज आपके परिवार में खुशियों का माहौल बनेगा। आज आपको किसी महत्वपूर्ण चर्चा में शामिल होने का मौका मिलेगा, जिसमें आपकी सहभागिता अच्छी खासी रहेगी। कोई प्रिय मित्र आपसे किसी विशेष विषय को लेकर बातचीत कर सकता है। आज आप सकारात्मक ऊर्जा के साथ आगे बढ़ेंगे , जिससे काम में बेहतर परिणाम मिलेंगे।

अशोभनीय आचरण वाले पार्टी प्रवक्ताओं पर अंकुश आवश्यक

(डॉ. सुधाकर आशावादी-विनायक फीचर्स)

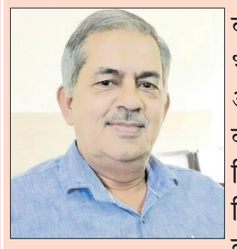

सार्वजनिक मंचों पर चर्चित होने की चाहत व्यक्ति को कितना पथ भ्रष्ट कर सकती है। इसके अनेक उदाहरण नेताओं की बहकती जुबान से मिलते हैं। पक्ष हो या विपक्ष, आजकल नेताओं की जुबान बहुत फिसलने लगी है। सार्वजनिक मंचों से टिप्पणी करते हुए वे ये नहीं विचारते कि उनके मुँह से निकला कोई एक वाक्य भी किस प्रकार उनकी पार्टी की फ़ज़ीहत करा सकता है तथा सार्वजनिक रूप से उन्हें माफी माँगने के लिए विवश कर सकता है। इतना ही नही जिन लोगों को विभिन्न राजनीतिक दलों की विचारधारा का विस्तार करने का दायित्व सौंपा गया है तथा जिन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए राजनीतिक दलों ने अपना अधिकृत प्रवक्ता नियुक्त किया है , वही अपनी भाषा और आचरण से पार्टी की नकारात्मक छवि प्रस्तुत करने पर तुले हैं। वस्तुस्थिति यह है कि सिर्फ़ सार्वजनिक मंचों पर ही नहीं बल्कि ई मीडिया और सोशल मीडिया पर होने वाली बहस में विशेष राजनीतिक दल के प्रति अपनी निष्ठा का प्रदर्शन करते हुए प्रवक्ता गण अपशब्द बोलने एवं गाली गलौज करने पर आमादा हो जाते हैं। कई बार सार्वजनिक मंचों पर यही गाली गलौज मार पीट में भी बदल जाती है। लोकतंत्र का इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा, कि सार्वजनिक मंचों पर नेता गण ऐसे शब्द बोलने में भी संकोच नही करते, जिन शब्दों को घर परिवार में बोलने से परहेज़ किया जाना अपेक्षित होता है। विचारणीय प्रश्न यह है कि यदि किसी राजनीतिक दल के प्रवक्ता का आचरण ही सभ्यता के दायरे लांघकर असभ्यता की परिधि में आता हो, तो अशोभनीय आचरण के चलते ऐसे लोगों को प्रवक्ता पद से अविलम्ब क्यों नही हटाया जाना चाहिए ?

हर लड़की और महिला के जीवन का हिस्सा पीरियड्स

बंदना प्रेयसी

सदियों से एक लड़की की माहवारी ऐसा विषय रहा जिसे उसे छिपाना पड़ता था। फुसफुसाहटें, झिझक और चुप्पी-ये सब उस प्राकृतिक जैविक प्रक्रिया के साथ जुड़ गई, जो हर लड़की और महिला के जीवन का हिस्सा है, लेकिन आज बिहार में यह खामोशी टूट रही है-और उसकी जगह ले रही है एक सशक्त आवाज।

मासिक धर्म स्वच्छता, जिसे अब तक सार्वजनिक नीति और सामाजिक दायरे के बाहर रखा गया था, अब हमारे स्कूलों, सामुदायिक भवनों, सरकारी कार्यालयों और सबसे महत्त्वपूर्ण हमारे घरों में प्रवेश कर रही है। यह सिर्फ सैनिटरी पैड्स की उपलब्धता या शौचालयों की सुविधा की बात नहीं है-यह एक सामाजिक परिवर्तन है, जो हमारी बेटियों और महिलाओं के प्रति हमारे व्यवहार को सिरे से बदल रहा है। देश-समाज के लिहाज से इस बदलाव के बहुत मायने है। क्योंकि अगर लड़कियां गरिमा के साथ अपनी माहवारी को संभाल सकती हैं, तो वे स्कूल में आसानी से पठन-पाठन कर सकती हैं। जब महिलाओं को स्वच्छता की सुविधा मिलती है, तो वे पूरी क्षमता से कार्यस्थल, समाज और जीवन में अपने दायित्वों का निर्वाहन करती है।

जब समुदाय बेझिझक, बिना शर्म के मासिक धर्म पर खुलकर बातचीत करता है तो इसका सकारात्मक प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता पर तो पड़ता ही है यह समाज बनने के रूप में भी फलीभूत होता है। दरअसल, यह केवल स्वच्छता की ही नहीं बल्कि न्याय की भी बात है। इस लिहाज से बिहार की प्रगति उल्लेखनीय है। भारत सरकार की मासिक धर्म स्वच्छता योजना और बिहार सरकार के समर्पित प्रयासों के तहत, राज्य में स्वच्छ तरीकों से माहवारी प्रबंधन करने वाली युवतियों की संख्या (एनएफएचएस-4) के 31 प्रतिशत से बढ़कर (एनएफएचएस-5) में लगभग 59 प्रतिशत हो गई है, यानी दोगुनी। यह प्रगति राष्ट्रीय औसत (57.6 प्रतिशत से 77.3 प्रतिशत) की तुलना में भी उल्लेखनीय है।

ये महज आंकड़ें नहीं हैं बल्कि हमारे सामूहिक प्रयासों की पहचान है। वे सामूहिक प्रयास जिसमें फ्रंटलाइन आशा कार्यकर्ता, शिक्षक, माता-पिता और खुद लड़कियों की सहभागिता से ही बदलाव संभव हुआ है। ये उपलब्धियां शानदार हैं, लेकिन अभी हमारा काम पूरा नहीं हुआ है। सुलभ सैनिटेशन मिशन के हालिया अध्ययन (2023-24) के अनुसार, खगड़िया और कटिहार में आधे से अधिक महिलाओं को अपने पिछले मासिक चक्र में आवश्यक साधन उपलब्ध नहीं थे, और 62 प्रतिशत के पास उन्हें सुरक्षित रूप से फेंकने की जगह तक नहीं थी। ये आंकड़े केवल सेवाओं की कमी को नहीं दर्शाते, बल्कि एक गहरे मसले को उजागर करते हैं- महिलाओं के पास अपनी सुविधा और जरूरत के अनुसार विकल्प चुनने की आजादी नहीं है, उन्हें गरिमा से जीने का अधिकार नहीं मिलता, और उनकी आवाज समाज में सुनी नहीं जाती।

इसीलिए बिहार का मासिक धर्म स्वास्थ्य प्रबंधन रोडमैप (202225) केवल एक नीति नहीं-यह एक वादा है। यह एक ऐसा समन्वित प्रयास है जिसमें मासिक धर्म को एक 'साइड इश्यू' नहीं, बल्कि न्यायसंगत बिहार की परिकल्पना का मूल माना गया है। इसमें स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा से जुड़ता है, ग्रामीण विकास स्वच्छता के साथ मिलकर काम करता है। इसी का परिणाम है कि जमीनी स्तर पर वास्तविक परिवर्तन संभव हो पाया है। यूनिसेफ के सहयोग से स्कूलों में हमने 'सहेली कक्ष' की शुरुआत की है। सहेली कक्ष दरअसल ऐसा सुरक्षित स्थान है जहां लड़कियां विश्राम कर सकें, कपड़े बदल सकें और आत्मविश्वास के साथ अपनी माहवारी का प्रबंधन कर सकें।

अररिया और पूर्णिया के 50 से अधिक सरकारी स्कूलों में यह कक्ष बन चुके हैं, इसके अलावा अन्य स्कूलों में कक्ष बन रहे हैं, लेकिन सुरक्षित स्थान केवल दीवारों तक सीमित नहीं-वे शिक्षकों, सहपाठियों और समुदाय के नजरिए में भी परिलक्षित होना चाहिए। हमने मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना और राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम (आरकेएसके) सरीखे कार्यक्रमों को भी मासिक धर्म स्वच्छता के लक्ष्यों से जोड़ने का प्रयास किया है। इन योजनाओं की क्षमताएं असीमित हैं, लेकिन तभी जब अंतिम छोर तक जिम्मेदारी और संवेदनशीलता संग सेवाएं पहुंचे। नीति और जनता के बीच की दूरी कम होनी चाहिए। और यह केवल 'महिलाओं का मुद्दा' नहीं है।

पुरुष और लड़के, पिता और भाई, शिक्षक और पंचायत प्रतिनिधि-हर आवाज महत्त्वपूर्ण है। जब वे आगे आते हैं, सुनते हैं, और साथ खड़े होते हैं, तो वे शर्म और संकोच के बंधन को तोड़कर विश्वास की डोर को मजबूत करते हैं। यही समावेशिता का असली चेहरा है। आगे बढ़ते हुए, यह सुनिश्चित करना होगा कि हर आंगनबाड़ी केंद्र में किशोरियों को सहयोग देने के लिए प्रशिक्षित कर्मचारी हों।

हर स्वास्थ्य कार्यकर्ता माहवारी पर संवेदनशीलता और आत्मविश्वास से बात कर सके, और हर स्कूल माहवारी को जीवन का हिस्सा माने-कक्षा छोड़ने का कारण नहीं। रोडमैप विकसित होता रहेगा। योजनाएं परिणाम देती रहेंगी। क्योंकि यह केवल एक जैविक प्रक्रिया को प्रबंध करने की बात नहीं-यह संभावना को अनलॉक करने और एक ऐसे भविष्य की लड़ाई है, जहां कोई भी लड़की सिर्फ इसलिए पीछे न रह जाए क्योंकि उसे माहवारी होती है।

सेंसेक्स लाल निशान में खुला, मिडकैप और स्मॉलकैप में तेजी

मुंबई, (ए.)। भारतीय शेयर बाजार मंगलवार को लाल निशान में खुला। सुबह 9ः43 पर सेंसेक्स 234 अंक या 0.29 प्रतिशत की गिरावट के साथ 81,139 और निफ्टी 64 अंक या 0.28 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 24,649 पर था। लार्जकैप की अपेक्षा मिडकैप और स्मॉलकैप में तेजी देखी जा रही है। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 83.60 अंक या 0.14 प्रतिशत की तेजी के साथ 57,859 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 107.45 अंक या 0.59 प्रतिशत की बढ़त के साथ 18,203 पर था।

निफ्टी ऑटो, पीएसयू बैंक, मेटल, मीडिया और कमोडिटी सबसे ज्यादा बढ़ने वाले इंडेक्स थे। आईटी, एफएमसीजी, इन्फ्रा और प्राइवेट बैंक इंडेक्स लाल निशान में थे।

शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स में शामिल शेयरों में इटरनल (जोमैटो), टाटा स्टील, एमएंडएम, इंडसइंड बैंक, टाटा मोटर्स और एशियन पेंट्स में टॉप गेनर्स थे। एलएंडटी, बजाज फाइनेंस, भारती एयरटेल, एचयूएल, आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक, मारुति सुजुकी टॉप लूजर्स थे।

चॉइस ब्रोकिंग के डेरिवेटिव विश्लेषक हार्दिक मटालिया ने कहा, सपाट शुरुआत के बाद निफ्टी को 24,700, 24,600 और 24,500 पर सपोर्ट मिल सकता है। तेजी की स्थिति में 24,800, 24,900 और 25,000 रुकावट के स्तर होंगे।

ज्यादा एशियाई बाजार तेजी के साथ कारोबार कर रहे थे। टोक्यो, शंघाई, जकार्ता और हांगकांग हरे निशान में थे।

विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने 2 जून को लगातार दूसरे सत्र में अपनी बिकवाली जारी रखी और 2,589 करोड़ रुपए के इक्विटी बेचे, जबकि घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) ने दसवें दिन अपनी खरीद जारी रखी और उसी दिन 5,313 करोड़ रुपए के इक्विटी खरीदे।

वैश्विक कारणों के चलते सोमवार को भी शेयर बाजार लाल निशान में बंद हुआ था। कारोबार के अंत में सेंसेक्स 77.26 अंक या 0.09 प्रतिशत की गिरावट के साथ 81,373.75 और निफ्टी 34.10 अंक या 0.34 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 24,716.60 पर था।

दोपहिया ईवी मार्केट में तेजी से घट रहा ओला इलेक्ट्रिक का दबदबा, मई में बिक्री 51 प्रतिशत घटी

नई दिल्ली, (ए.)। दोपहिया ईवी वाहन बनाने वाली कंपनी ओला इलेक्ट्रिक की बिक्री मई में सालाना आधार पर 51 प्रतिशत गिरकर 18,499 यूनिट्स हो गई है। कंपनी मार्केट में टीवीएस मोटर और बजाज ऑटो के बाद तीसरे स्थान पर खिसक गई है। सरकारी वाहन डेटा के मुताबिक, मई में दोपहिया ईवी वाहन सेगमेंट का प्रदर्शन मजबूत रहा है और इस दौरान रिटेल बिक्री बढ़कर 1,00,266 यूनिट्स हो गई है।

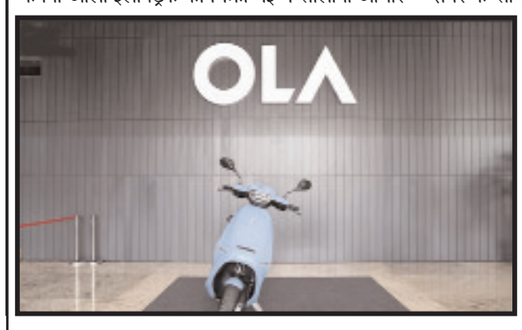

दोपहिया ईवी वाहन सेगमेंट में टीवीएस मोटर शीर्ष पर रही। कंपनी की बिक्री मई में सालाना आधार पर 107 प्रतिशत बढ़कर 24,560 यूनिट्स रही और कंपनी का मार्केट शेयर 24 प्रतिशत रहा।

बजाज ऑटो की बिक्री मई में सालाना आधार पर 135 प्रतिशत बढ़कर 21,770 यूनिट्स हो गई है। दोपहिया ईवी वाहन सेगमेंट में 22 प्रतिशत के मार्केट शेयर के साथ दूसरे स्थान पर रही।

भाविश अग्रवाल की अगुआई वाली ओला इलेक्ट्रिक ने पिछले महीने 18 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी दर्ज की और मार्केट में तीसरे स्थान पर रही।

एथर एनर्जी ने 12,840 यूनिट्स बेचीं और बाजार में 13 प्रतिशत हिस्सेदारी हासिल की।

बीते हफ्ते ओला इलेक्ट्रिक ने वित्त वर्ष 25 की चौथी तिमाही के नतीजे पेश किए थे। जनवरी-मार्च अवधि में कंपनी का घाटा सालाना आधार पर 109 प्रतिशत बढ़कर 870 करोड़ रुपए हो गया है, जो कि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 416 करोड़ रुपए था।

वित्त वर्ष 25 की मार्च तिमाही में कंपनी की ऑपरेशंस से आय सालाना आधार पर 61.8 प्रतिशत कम होकर 611 करोड़ रुपए रह गई है, जो कि एक साल पहले समान अवधि में 1,598 करोड़ रुपए थी।

2021 के अंत में अपने इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की कमर्शियल डिलीवरी शुरू करने के बाद से यह कंपनी का सबसे खराब तिमाही प्रदर्शन है।

पूरे वित्त वर्ष 2025 के लिए ओला इलेक्ट्रिक की आय भी घटकर 4,645 करोड़ रुपए रह गई है, जो वित्त वर्ष 2024 में 5,126 करोड़ रुपए थी।

अब न्यूनतम बैलेंस रखने का झंझट खत्म, इस बैंक ने अपने ग्राहकों को दी बड़ी राहत

नई दिल्ली, (ए.)। केनरा बैंक के ग्राहकों के लिए खुशखबरी है। बैंक ने ग्राहकों को राहत देते हुए रविवार से न्यूनतम बैलेंस न रखने पर जुर्माने के नियम को हटा दिया है। बैंक के इस कदम के बाद सेविंग्स अकाउंट में न्यूनतम बैलेंस नहीं रखने पर किसी भी प्रकार का कोई चार्ज या जुर्माना नहीं लगेगा। यह नया नियम सभी प्रकार के सेविंग्स अकाउंट्स पर लागू होगा।

केनरा बैंक सभी प्रकार के सेविंग्स अकाउंट पर न्यूनतम बैलेंस की सीमा को हटाने वाला पहला बड़ा सरकारी बैंक है। इस नियम के बाद केनरा बैंक के ग्राहक बिना किसी जुर्माने के सेविंग अकाउंट में शून्य बैलेंस रख सकते हैं।

माना जा रहा है कि इस कदम से बैंक के करोड़ों सेविंग अकाउंट होल्डर्स को फायदा होगा और अकाउंट में उपलब्ध पूरी राशि का आसानी से किसी भी लेनदेन के लिए उपयोग कर सकते हैं। केनरा बैंक ने अपनी पोस्ट में कहा, एक जून, 2025 से केनरा बैंक न्यूनतम बैलेंस न रखने पर कोई जुर्माना नहीं लगाएगा। यह नियम सभी सेविंग्स अकाउंट होल्डर्स के लिए है।

इससे पहले केनरा बैंक में सेविंग्स अकाउंट में ग्राहकों को शहरों में 2,000 रुपए, अर्ध-शहरी इलाकों में 1,000 रुपए और ग्रामीण इलाकों में 500 रुपए का न्यूनतम बैलेंस रखना होता है। अगर ग्राहक न्यूनतम बैलेंस रखने में असमर्थ होते थे तो उन पर जुर्माना लगाया जाता था।

केनरा बैंक के इस कदम से छात्रों, महिलाओं, निम्न आय वर्ग, वरिष्ठ नागरिकों के साथ सभी वर्गों को फायदा होगा।

केनरा बैंक का नाम देश के बड़े सरकारी बैंकों में आता है। वित्त वर्ष 25 की मार्च तिमाही में बैंक की आय 31,496 करोड़ रुपए थी। इस दौरान बैंक को 5,111 करोड़ रुपए का मुनाफा हुआ था। पूरे वित्त वर्ष 25 में बैंक की कुल आय 1.21 लाख करोड़ रुपए थी।

टोटलएनर्जीज अदाणी ग्रीन की ग्रोथ का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध : सीईओ

पेरिस, (ए.)। फ्रांस की एनर्जी कंपनी टोटलएनर्जीज के सीईओ और चेयरमैन पैट्रिक पोयाने ने कहा कि उनकी कंपनी अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड के विस्तार का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है। केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के साथ पेरिस में बातचीत के दौरान पोयाने ने कहा कि वे अदाणी ग्रीन के विस्तार का समर्थन जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा, अदाणी ग्रीन जिसकी क्षमता 14 गीगावाट है। हम इसकी ग्रोथ को समर्थन जारी रखेंगे। गोयल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट करते हुए लिखा, टोटलएनर्जीज के चेयरमैन और सीईओ पैट्रिक पोयाने से मुलाकात की और भारत के लिए कंपनी की निवेश योजनाओं और रिन्यूएबल एनर्जी सेक्टर में सहयोग के अवसरों पर चर्चा की। फ्रांसीसी एनर्जी कंपनी ने भारत में लगभग 5 बिलियन डॉलर का निवेश किया है, जो प्राकृतिक गैस इन्फ्रास्ट्रक्चर, सिटी गैस डेवलपमेंट और क्लीन एनर्जी प्रोजेक्ट्स विशेष रूप से सौर और पवन ऊर्जा पर केंद्रित है। जनवरी 2021 में अदाणी ग्रुप की कंपनी अदाणी ग्रीन में टोटलएनर्जीज ने माइनॉरिटी हिस्सेदारी लेकर साझेदारी की शुरुआत की थी। पिछले महीने अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड दुनिया की पहली ऐसी स्वतंत्र बिजली उत्पादक (आईपीपी) रिन्यूएबल एनर्जी (आरई) कंपनी बन गई है, जिसने अपने पूरे परिचालन पोर्टफोलियो को वाटर पॉजिटिव में बदल दिया है। अदाणी ग्रीन एनर्जी ने सस्टेनेबिलिटी के लिए एक नया मानक स्थापित करने के लिए अपने वित्त वर्ष 26 के लक्ष्य से एक साल पहले वाटर पॉजिटिव होने का लक्ष्य हासिल किया है। यह इस मील के पत्थर तक पहुंचने वाली शीर्ष 10 वैश्विक कंपनियों (परिचालन आरई पोर्टफोलियो के संदर्भ में) में से पहली और एकमात्र है। अदाणी ग्रीन ने वित्त वर्ष 25 के लिए शानदार नतीजे पेश किए। इस दौरान कंपनी ईबीआईटीडीए एक अरब डॉलर के पार पहुंच गया और 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ कंपनी देश में सबसे अधिक 14.2 गीगावाट रिन्यूएबल एनर्जी क्षमता वाली कंपनी का खिताब बरकरार रखा।

महिला विश्व कप की तारीखों और स्थानों का हुआ ऐलान

-30 सितंबर से 2 नवंबर तक खेलें जायेंगे मैच

नई दिल्ली, (ए.)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने महिला वनडे विश्व कप के 13वें संस्करण की तारीखों और स्थानों की घोषणा कर दी है. टूर्नामेंट 30 सितंबर से 2 नवंबर तक आयोजित किया जाएगा. ये विश्व कप आठ टीमों के बीच खेला जाएगा. इसके सभी मैच भारत और श्रीलंका में पांच स्थानों पर कराए जाएंगे.

आईसीसी के एक बयान के अनुसार विश्व कप के लिए स्थान एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम (बेंगलुरु), असम क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम (गुवाहाटी), होलकर स्टेडियम (इंदौर), एसीए-वीडीसीए स्टेडियम (विशाखापत्तनम) और आर. प्रेमदासा स्टेडियम (कोलंबो) होंगे. ये आयोजन 30 सितंबर को बेंगलुरु में भारत के साथ एक ब्लॉकबस्टर मुकाबले के साथ शुरू होगा क्योंकि महिला क्रिकेट विश्व कप 12 साल बाद क्रिकेट प्रेमी देश यानी भारत में वापस आ रहा है.

आईसीसी ने कहा, पहला सेमीफाइनल 29 अक्टूबर को गुवाहाटी या कोलंबो में होगा, जबकि दूसरा सेमीफाइनल अगले दिन 30 अक्टूबर को बेंगलुरु में खेला जाएगा. इसके बाद दोनों फाइनलिस्टों के पास खिताब के निर्णायक मुकाबले की तैयारी के लिए कम से कम दो दिन का समय होगा. 2025 महिला वनडे विश्व कप का फाइनल रविवार 2 नवंबर को बेंगलुरु या कोलंबो में होगा.

आईसीसी ने कहा, महिला विश्व कप में भाग लेने वाली आठ टीमें भारत, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, न्यूजीलैंड, श्रीलंका, बांग्लादेश और पाकिस्तान हैं. ऑस्ट्रेलिया गत चैंपियन है और अपनी झोली में एक और खिताब जोड़ने के लिए उत्सुक होगा. उन्होंने 2022 में न्यूजीलैंड में सबसे हालिया महिला विश्व कप के फाइनल में इंग्लैंड को हराया था. ऑस्ट्रेलिया टूर्नामेंट के इतिहास में सबसे सफल टीम भी है, जिसने सात मौकों पर

चैंपियन का ताज पहना है. आईसीसी के चेयरमैन जय शाह ने कहा, हम आने वाले महीनों में भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड और इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड द्वारा आयोजित किए जाने वाले दो वैश्विक महिला टूर्नामेंटों के बारे में कुछ महत्वपूर्ण घोषणाएं करने के लिए उत्साहित हैं. प्रशंसकों ने हाल के वर्षों में महिलाओं के खेल के लिए बहुत समर्थन दिखाया है और मुझे यकीन है कि अब जब उनके पास महत्वपूर्ण तारीखें और स्थान हैं. तो वो इसे अपना समर्थन देंगे. महिला क्रिकेट हमारी दृष्टि में सबसे आगे है और हमें विश्वास है कि ये दो आगामी टूर्नामेंट न केवल हाल के वर्षों में हमारे द्वारा बनाए गए अविश्वसनीय गति को बनाए रखेंगे, बल्कि इसे और अधिक ऊंचाइयों तक ले जाएंगे.

इसके साथ ही आईसीसी महिला टी20 विश्व कप 2026 की तारीखों और स्थानों का भी ऐलान आईसीसी द्वारा कर दिया गया है. टी20 वर्ल्ड कप का पहला मैच 12 जून को बर्मिंघम के एजबेस्टन में आयोजित किया जाएगा, जिसमें मेजबान इंग्लैंड टूर्नामेंट की शुरुआत करेगा. लंदन का ओवल 30 जून और 2 जुलाई को क्रमशः दोनों सेमीफाइनल की मेजबानी करेगा, जबकि फाइनल 5 जुलाई को प्रतिष्ठित लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड पर होगा.

ये टूर्नामेंट 24 दिनों तक चलेगा जिसमें इंग्लैंड के सात अलग-अलग स्थानों पर 33 मैच खेले जाएंगे, जिनमें मैनचेस्टर का ओल्ड ट्रैफ़र्ड क्रिकेट ग्राउंड, लीड्स का हेडिंग्ले, बर्मिंघम का एजबेस्टन, साउथेम्प्टन का हैम्पशायर बाउल, ब्रिस्टल का ब्रिस्टल काउंटी ग्राउंड और लंदन का ओवल और लॉर्ड्स शामिल हैं. यह अब तक का सबसे बड़ा महिला टी20 विश्व कप संस्करण है, जिसमें 12 टीमें प्रतिष्ठित ट्रॉफी के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही हैं.

मेजबान इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका, वेस्टइंडीज और गत विजेता न्यूजीलैंड सहित आठ टीमें पहले ही टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई कर चुकी हैं, जबकि चार और टीमें अगले साल क्वालीफायर के जरिए उनसे जुड़ेंगी।

नॉर्वे शतरंज टूर्नामेंट में डी गुकेश का जलवा, रोमांचक मुकाबले में अर्जुन एरिगैसी को हराया

नई दिल्ली, (ए.)। विश्व चैंपियन डी गुकेश ने सोमवार को नॉर्वे शतरंज टूर्नामेंट के 7वें राउंड के रोमांचक मुकाबले में हमवतन अर्जुन एरिगैसी पर अपनी पहली क्लासिकल जीत दर्ज की - और ऐसा उन्होंने उस स्थिति से किया जो लगभग खत्म हो चुकी थी. यह उल्लेखनीय जीत गुकेश द्वारा क्लासिकल शतरंज में पहली बार विश्व नंबर 1 मैग्नस कार्लसन को हराने के ठीक एक दिन बाद मिली. लगातार जीत ने 19 वर्षीय भारतीय खिलाड़ी को प्वाइंट्स टेबल में कार्लसन से ऊपर पहुंचा दिया है, जिससे वह फैबियानो कारुआना के बाद दूसरे स्थान पर आ गए हैं, जिन्होंने अपने ही मैच में वेई यी को हराया था.

दो भारतीय खिलाड़ियों के बीच आमना-सामना उम्मीदों पर खरा उतरा. अर्जुन ने शुरुआत में ही बढ़त हासिल कर ली, शुरुआत में ही उन्होंने मिडिलगेम में गुकेश को मात दे दी और वह एक शानदार जीत की ओर बढ़ते हुए दिख रहे थे. गुकेश की एक महत्वपूर्ण चूक ने उन्हें कमजोर और स्थितिगत रूप से समझौता करने पर मजबूर कर दिया, जिससे कई विश्लेषकों ने उनकी स्थिति को लगभग खो दिया बताया.

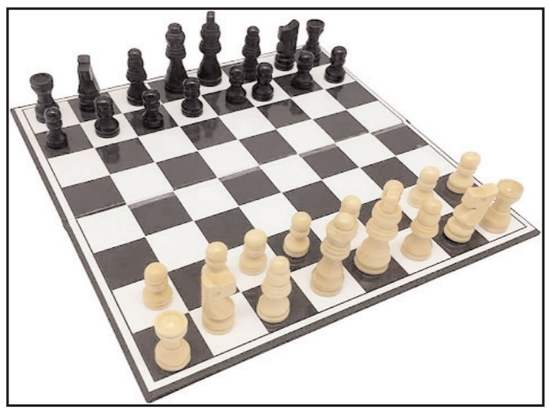

हालांकि, गुकेश ने अपना आपा नहीं खोया शानदार खेल का प्रदर्शन किया. बढ़ते दबाव के तहत, उन्होंने धीरे-धीरे सटीक और शांत डिफेंस के साथ खेल में वापसी की. एक रोमांचक बदलाव में, उन्होंने अर्जुन के लाभ को बेअसर कर दिया और गति को नियंत्रित करना शुरू कर दिया.

जब समय की समस्या मंडरा रही थी, अर्जुन ने गुकेश को मौका देने के लिए पर्याप्त रूप से लड़खड़ाया - जिसका उन्होंने सटीकता के साथ फायदा उठाया. एक कांटे के मैच के बाद, अर्जुन को इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा. यह जीत न केवल गुकेश के लिए एक व्यक्तिगत मील का पत्थर है, बल्कि विश्व मंच पर सबसे कड़े प्रतियोगियों में से एक के रूप में उनकी स्थिति को भी मजबूत करती है. शुरुआती 2 गेम गंवाने के बाद जिस तरीके से गुकेश ने वापसी की है उससे वर्ल्ड चैंपियन के फैंस सोशल मीडिया पर जश्न में डूबे हुए हैं।

-डब्ल्यूटीसी फाइनल

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया के इन बल्लेबाजों ने बनाए हैं सबसे ज्यादा रन

नईदिल्ली,ए.। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के तीसरे चक्र का फाइनल मुकाबला 11 जून से लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड पर शुरू होगा। इसके लिए ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम और दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट टीम जमकर तैयारी कर रही है।

कंगारू टीम अपने खिताब के बचाव के लिए फाइनल मुकाबले में उतरेगी। उसने पिछला खिताब भारतीय क्रिकेट टीम को हराकर अपने नाम किया था।

ऐसे में आइए दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सबसे ज्यादा रन बनाने वाले ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों पर एक नजर डाल लेते हैं।

इस सूची में पहले स्थान पर ऑस्ट्रेलिया के पूर्व दिग्गज बल्लेबाज और कप्तान रिकी पोंटिंग हैं।

उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहला मुकाबला साल 1997 में खेला था। आखिरी बार वह 2012 में इस टीम के खिलाफ खेलते हुए नजर आए थे।

उन्होंने 26 मुकाबलों की 48 पारियों में 3 बार नाबाद रहते हुए 2,132 रन बनाए थे। उनकी औसत 47.37 की रही थी।

उन्होंने 8 शतक और 11 अर्धशतक लगाए थे। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 143* रन था।

सूची में दूसरे स्थान पर ऑस्ट्रेलिया के पूर्व बल्लेबाज नील हार्वी हैं।

वह दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 1949 से 1958 तक टेस्ट क्रिकेट खेलते हुए नजर आए थे।

इस टीम के खिलाफ उन्होंने 14 मुकाबले खेले थे। इसकी 23 पारियों में 81.25 की उम्दा औसत के साथ 1,625 रन बनाने में सफल रहे थे।

उनके बल्ले से 8 शतक और 5 अर्धशतक निकले थे। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 205 रन रहा था। तीसरे स्थान पर पूर्व स्टार बल्लेबाज माइकल क्लार्क हैं। वह 2008 से 2014 तक दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ क्रिकेट का सबसे बड़ा प्रारूप खेलते हुए नजर आए थे।

उन्होंने 14 मुकाबले खेले थे। इसकी 27 पारियों में 5 बार नाबाद रहते हुए 1,487 रन बनाए थे। उनकी औसत 67.59 की रही थी।

उनके बल्ले से 5 शतक और 3 अर्धशतक निकले थे। क्लार्क का इस टीम के खिलाफ सर्वश्रेष्ठ स्कोर 259* रन रहा था।

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व सलामी बल्लेबाज मैथ्यू हेडन इस सूची में चौथे स्थान पर हैं।

उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहला टेस्ट मैच साल 1994 में खेला था। आखिरी बार वह 2009 में खेलते हुए नजर आए थे।

उन्होंने 19 टेस्ट की 36 पारियों में 43.70 की औसत से 1,486 रन बनाए थे। उनके बल्ले से 6 शतक और 5 अर्धशतक निकले थे। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 138 रन रहा था।

महिलाओं की मजबूत कहानियों से गुजराती सिनेमा को नई पहचान देने में मेरा योगदान: मानसी पारेख

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेत्री मानसी पारेख अपनी आने वाली गुजराती डार्क कॉमेडी थ्रिलर शुभचिंतक को लेकर चर्चा में हैं। वह इस फिल्म में मुख्य भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने रीजनल सिनेमा के बदलते स्वरूप के बारे में बात की। उनका मानना है कि उन्होंने ऐसी फिल्मों में काम किया है जो महिलाओं की मजबूत भूमिकाएं दिखाती हैं और इस तरह उन्होंने गुजराती सिनेमा का स्तर ऊंचा उठाने में योगदान दिया है।

अपनी नई फिल्म शुभचिंतक में अपने किरदार को लेकर बात करते हुए मानसी ने कहा कि उन्होंने अब तक कई तरह के अलग-अलग किरदार निभाए हैं।मानसी ने कहा, कच्छ एक्सप्रेस में मैंने एक बहुत सीधी-सादी और शांत स्वभाव वाली पत्नी का किरदार निभाया था। झमकुड़ी में मैं चुड़ैल बनी थी जो गांव में डर फैलाती है। डियर फादर में मैंने एक जिद्दी बहू का किरदार निभाया था, जो अपने ससुर की बातों को नहीं मानती।

लेकिन शुभचिंतक में मेरा किरदार पहले से बिल्कुल अलग है। इसमें मैं एक ऐसी लड़की बनी हूं जो अपने भाई की मौत का बदला लेने के लिए एक अमीर लड़के को प्यार के जाल में फंसाती है। मैंने अब तक जितने भी किरदार निभाए हैं, वे सब एक-दूसरे से अलग थे, लेकिन ऐसा किरदार मैंने पहले कभी नहीं किया।उन्होंने बताया कि इस फिल्म में उन्होंने कई ऐसे एक्शन सीन किए हैं जो उन्होंने पहले कभी नहीं किए थे।

एक्ट्रेस ने कहा, यह किरदार मेरे लिए एक कलाकार के तौर पर नई चुनौती थी। मेघना का किरदार निभाना मेरे लिए बहुत खास और शानदार अनुभव रहा, और मैं इस मौके के लिए बहुत आभारी हूं।रीजनल सिनेमा के बदलाव को लेकर मानसी ने कहा, अब ज्यादा से ज्यादा लोग क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्में देख रहे हैं। गुजराती सिनेमा में भी कई नई फिल्में बन रही हैं। मुझे लगता है कि मेरा योगदान ये रहा है कि मैंने ऐसी फिल्में चुनीं जिनमें महिलाएं मुख्य और मजबूत किरदार निभाएं। मैंने कोशिश की है कि औरतों को केंद्र में रखकर अच्छी कहानियां बनाई जाएं।उन्होंने आगे कहा कि पहले फिल्मों में महिलाओं को ज्यादा अच्छी भूमिकाएं नहीं मिलती थीं। आज भी कुछ दिक्कतें हैं, लेकिन वह चाहती हैं कि औरतों को मजबूत और अहम किरदार मिलें, इसलिए वह ऐसी फिल्में चुनती हैं जिनमें महिलाओं का किरदार सबसे ज्यादा मायने रखता हो।

ब्राउन कटआउट ड्रेस में सामंथा रुथ प्रभु ने बिखेरा हुस्न का जादू, एक्ट्रेस की हॉटनेस ने बढ़ाया सोसल मीडिया का तापमान

साउथ इंडस्ट्री की टॉप एक्ट्रेसेस में शुमार सामंथा रुथ प्रभु एक बार फिर अपने लेटेस्ट लुक को लेकर चर्चा में आ गई हैं. हाल ही में उन्होंने इंस्टाग्राम पर वोग ब्यूटी अवार्ड्स 2025 के रेड कार्पेट से अपनी तस्वीरें शेयर की हैं. इन तस्वीरों में सामंथा ब्राउन कलर की डीप कटआउट बॉडीकॉन ड्रेस में बेहद ग्लैमरस और बोल्ड नजर आ रही हैं.सामंथा ने अपने इस शानदार लुक के साथ कैप्शन में लिखा, स वोगब्यूटीअवार्ड्स2025 . इस ड्रेस को डिज़ाइनर क्रेशा बजाज ने डिज़ाइन किया है. सामंथा का हेयर और मेकअप भी बेहद एलिगेंट और परफेक्ट लग रहा है जिसे अवनि रम्भिया और दक्ष निधि ने स्टाइल किया है. तस्वीरें विकृतस्मृतियाँ द्वारा क्लिक की गई हैं.

सामंथा के इस अवतार पर फैंस और सेलेब्स जमकर प्यार लुटा रहे हैं. कमेंट सेक्शन में लोग उनकी तारीफों के पुल बांधते नजर आ रहे हैं. किसी ने उन्हें स्टनिंग क्वीन कहा तो किसी ने हॉटनेस ओवरलोडेड बताया. कुछ ही घंटों में पोस्ट को 3 लाख से ज्यादा लाइक्स मिल चुके हैं.

सामंथा का ये बोल्ड और क्लासी लुक साबित करता है कि वो सिर्फ एक शानदार एक्ट्रेस ही नहीं, बल्कि ट्रेंडसेटर भी हैं. हर बार की तरह इस बार भी उनका स्टाइल स्टेटमेंट फैशन लवर्स को इंस्पायर कर रहा है. वोग ब्यूटी अवार्ड्स 2025 में उनका यह लुक न केवल इंटरनेट पर वायरल हो गया है बल्कि इसने उन्हें एक बार फिर फैशन वर्ल्ड की टॉप डीवाज की लिस्ट में शुमार कर दिया है।

लंबी स्कर्ट के साथ बहुत अच्छे लगेंगे ये 5 ट्रेंडी और फैशनेबल टॉप, चुनकर दिखेंगी खूबसूरत

महिलाओं के फैशन में लगातार बदलाव आते ही रहते हैं, जिनके मुताबिक तैयार होना सुंदर दिखने का अच्छा तरीका होता है। इस साल लंबी स्कर्ट महिलाओं का पसंदीदा परिधान बन गई हैं, जो आरामदायक भी होती हैं और स्टाइलिश लुक भी देती हैं।

ये फ्लोई से लेकर बॉडीकॉन तक, कई डिजाइन में मिलती हैं और इन्हें कई तरीकों से स्टाइल किया जा सकता है।

आज के फैशन टिप्स में जानिए आपको लंबी स्कर्ट के साथ कैसे टॉप पहनने चाहिए।

ट्यूब टॉप

ट्यूब टॉप एक बिना आस्तीन और बिना पट्टियों वाला टॉप होता है, जो हमेशा ट्रेंड में रहता है। लंबी स्कर्ट के साथ इस डिजाइन वाला टॉप बेहद शानदार लगता है और यह गर्मी के मौसम के लिए भी बढ़िया रहता है।

आप एकल रंग वाले ट्यूब टॉप के साथ उससे मेल खाते रंग वाली लंबी स्कर्ट पहन सकती हैं, जिसपर फूलों वाला प्रिंट हो।

इस टॉप को चुनने पर आपका शरीर पतला भी लगेगा और आप सबसे अलग भी लगेंगी।

शर्ट

शर्ट एक सदाबहार परिधान है, जो हर मौके पर अच्छी लगती है और सभी बॉटमवियर के साथ जंचती भी है।

अगर आप लंबी स्कर्ट में एक फॉर्मल लुक पाना चाह रही हैं तो आपको उसके साथ शर्ट पेयर करनी चाहिए।

प्रिंटेड और फ्लोई स्कर्ट के साथ सफेद रंग की शर्ट स्टाइल करें, जो कॉटन, लिनन या सैटिन से बनी हो।

अगर आप पेंसिल स्कर्ट पहन रही हैं तो उसके साथ टी-शर्ट पहनें और ऊपर से शर्ट को लेयर करें।

ऑफ-शोल्डर टॉप

ऑफ-शोल्डर टॉप सबसे स्टाइलिश टॉप में से एक है, जिसमें बाजू नहीं होती और वह कंधों को नहीं ढकता है।

इस तरह के टॉप के साथ आपको लंबी फ्लेयर्ड स्कर्ट स्टाइल करनी चाहिए।

ऑफ-शोल्डर टॉप आपके कंधों को हाइलाइट करेगा और स्कर्ट आपके निचले शरीर को पतला दिखाएगी।

इस लुक को पूरा करने के लिए आप पेंडेंट वाला नेकलेस, फ्लैट चप्पल और टोट बैग कैरी कर सकती हैं।

हर महिला के पास ये 5 तरह की स्कर्ट जरूर होनी चाहिए।

टैंक टॉप या क्रॉप टॉप

गर्मी के मौसम में लंबी स्कर्ट के साथ महिलाएं टैंक टॉप पहनना पसंद करती हैं, जो स्लीवलेस होता है।

आप एकल रंग वाले टैंक टॉप के साथ लंबी फ्लोई स्कर्ट पहन सकती हैं या लंबी डेनिम स्कर्ट भी स्टाइल कर सकती हैं। इसके अलावा, इस साल महिलाएं लंबी स्कर्ट के साथ टी-शर्ट जैसे लुक वाले क्रॉप टॉप भी पहन रही हैं, जो टाइट फिटिंग वाले होते हैं।

ये दोनों लुक कॉलेज जाने या घूमने जाने के लिए सही रहते हैं।

पेप्लम टॉप

पेप्लम टॉप एक फ्लोई टॉप है, जो कमर से कसा होता है और उसके नीचे रफल लगी होती हैं। लंबी स्कर्ट के साथ इस डिजाइन वाले टॉप शानदार लगते हैं। इन्हें अलग-अलग तरीके से स्टाइल करके आप पारंपरिक और पश्चिमी, दोनों लुक पा सकती हैं।

जानिए डेडलिफ्ट एक्सरसाइज करने के फायदे और अन्य जरूरी बातें

डेडलिफ्ट एक ऐसी एक्सरसाइज है, जो पूरे शरीर को मजबूत बनाती है। यह खासकर पीठ, पैरों और हाथों की मांसपेशियों पर काम करती है। डेडलिफ्ट को सही तरीके से करने पर कई फायदे मिल सकते हैं।

आइए आज हम आपको इस एक्सरसाइज से जुड़ी कुछ जरूरी बातें बताते हैं, जिससे आप इसे सही तरीके से कर सकें और इसके सभी लाभ प्राप्त कर सकें।

डेडलिफ्ट करने का सही तरीका

सबसे पहले एक वजन को जमीन से उठाएं और उसे अपने कूल्हों के पास लाएं। इस दौरान आपकी पीठ सीधी होनी चाहिए और घुटने थोड़े मुड़े होने चाहिए।

अब वजन को धीरे-धीरे नीचे ले जाएं, लेकिन ध्यान रखें कि आपकी पीठ हमेशा सीधी रहे। इस प्रक्रिया को वजन को उठाने और नीचे लाने के रूप में दोहराएं।

इस एक्सरसाइज को करते समय सांस लेने और छोड़ने का सही तरीका अपनाएं ताकि आप इसे आसानी से कर सकें।

डेडलिफ्ट के दौरान सांस लेने का तरीका

डेडलिफ्ट करते समय सांस लेना और छोड़ना बहुत जरूरी है।

जब आप वजन को उठाते हैं तो सांस लें और जब उसे नीचे ले जाते हैं तो सांस छोड़ें। इससे आपकी मांसपेशियां बेहतर तरीके से काम करेंगी और आपको अधिक लाभ मिलेगा।

सही तरीके से सांस लेने पर आपकी ऊर्जा स्तर भी बढ़ेगा और आप अधिक समय तक एक्सरसाइज कर सकेंगे। यह प्रक्रिया आपके शरीर को संतुलित बनाए रखने में मदद करती है।

डेडलिफ्ट करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

डेडलिफ्ट करते समय कुछ सावधानियां बरतनी चाहिए जैसे कि भारी वजन न उठाएं अगर आप नए हैं तो हल्के वजन से शुरू करें।

इसके अलावा पीठ को झुकाकर न उठाएं क्योंकि इससे चोट लग सकती है। हमेशा वजन को नियंत्रित तरीके से उठाएं और नीचे लाएं।

अगर आपको कोई चोट लगी हो या पीठ में दर्द हो तो इस एक्सरसाइज को न करें। सही तरीके से डेडलिफ्ट करने पर आप मजबूत मांसपेशियां बना सकते हैं।

डेडलिफ्ट से मिलने वाले फायदे

डेडलिफ्ट करने से कई फायदे मिल सकते हैं जैसे कि यह पीठ की मांसपेशियों को मजबूत बनाती है, पैरों की ताकत बढ़ाती है और हाथों की मांसपेशियों पर काम करती है।

इसके अलावा यह एक्सरसाइज शरीर के संतुलन को भी सुधारती है और सहनशक्ति बढ़ाती है।

नियमित रूप से डेडलिफ्ट करने से आपका शरीर फिट रहता है और आप अधिक सक्रिय महसूस करते हैं। यह एक्सरसाइज आपके समग्र स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी है।

भवन निर्माण में खामियों के चलते 2 साल बाद भी प्रारंभ नहीं हो पाया कैलारस का संजीवनी क्लिनिक

राधाकृष्ण सिंघल /सोनू पाराशर

कैलारस। लोगों को प्राथमिक उपचार समय पर मिले, इस उद्देश्य के साथ पूरे प्रदेश में संजीवनी क्लिनिक खोलने की योजना सरकार लेकर आई, नगरीय क्षेत्रों में इस तरह के क्लिनिक की स्थापना गरीब बस्तियों और मोहल्लों में की जाएगी। मेडिकल कॉलेज और जिला अस्पतालों के साथ इन क्लिनिक को जोड़ा जाएगा, जहां पर प्राथमिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों की तुलना में बेहतर उपचार की सुविधा मिल सके। एक बार प्राथमिक उपचार मिलने के बाद अगर ऑपरेशन की जरूरत है या गंभीर रोगी हैं तो फिर उन्हें अस्पतालों में शिफ्ट किया जाएगा औरआयुष्मान योजना के तहत उनका महंगा ऑपरेशन या इलाज भी कराया जाएगा। इसी योजना के तहत कैलारस नगर परिषद के वार्ड क्रमांक 07 अयोध्या बस्ती में 25 लाख की लागत से संजीवनी क्लिनिक के निर्माण कार्य का भूमि पूजन 17 फारब्रीव2023 को नगर परिषद कैलारस द्वारा भारत सरकार के पूर्व केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर जी द्वारा कराया गया था उक्त संजीवनी क्लिनिक भवन का निर्माण कार्य संबंधित निर्माण एजेंसी द्वारा कराया गया लेकिन कुछ खामियों के चलते आज तक उक्त भवन विभाग को हैंड ओवर नहीं हुआ हे इस कारण आज दो साल बाद भी संजीवनी क्लिनिक प्रारंभ नहीं हो पाया है जबकि इस संबंध में स्वास्थ्य केंद्र कैलारस के बीएमओ डॉ एस आर मिश्रा ने बताया कि संजीवनी क्लिनिक का पूरा स्टाफ आ चुका हे और वर्तमान में कैलारस हॉस्पिटल में सेवाएं दे रहा हे बिल्डिंग हमें हैंड ओवर हो जाती हे तो क्लिनिक प्रारंभ हो जाएगा वहीं नगर परिषद कैलारस के तकनीकी अधिकारियों द्वारा बिल्डिंग में कुछ खामियां बताई हे जिसके लिए वरिष्ठ अधिकारियों को भी अवगत कराया गया हे उन कमियों को शीघ्र दूर किया जा समाचार पत्रों में ई संजीवनी हॉस्पिटल कैलारस का निर्माण कार्य अधूरा होने की खबर प्रकाशित होने के बाद मुख्य चिकित्सा अधिकारी पद्मेश उपाध्याय ने सहायक यंत्री संजय विश्वकर्मा को अस्पताल की स्थिति की रिपोर्ट देने के लिए पत्र लिखा।पत्र के माध्यम

से सहायक यंत्री द्वारा अवगत कराया है कि उक्त भवन मुख्यमंत्री ई-संजीवनी,नगरपालिका कैलारस को निर्माण हेतु दिया गया था।जो आज दिनांक तक पूर्ण नहीं हुआ है एवं समय-समय पर निरीक्षण कर कार्यलयीन पत्रों के माध्यम से अपूर्ण कार्य को पूर्ण करने हेतु नगरपालिका कैलारस को अवगत भी कराया जा चुका है।उन्होंने बताया कि भवन में खिडकियां एवं दरवाजे टूटे हुए है पैन्ट का कार्य पूर्ण नहीं हुआ है, फ्लोर में दरार आ गयी है, मच्छर जाली नहीं है, पानी की कोई व्यवस्था नहीं है, लाइट फिटिंग में अर्थिंग नहीं की गई है, ओपीडी कक्ष में वॉशवेसन नहीं है।इन स्थितियों को देखते हुए एवं भवन पूरा ना होने के कारण स्वास्थ्य विभाग को हस्तानान्तरित नहीं किया गया हैं।जिला चिकत्सा अधिकारी का कहना है कि अस्पताल का कार्य पूर्ण ना होने के कारण एवं स्वास्थ्य विभाग को हस्तानांतरित ना होने के कारण आज दिनांक तक वहाँ ई संजीवनी हॉस्पिटल का संचालन नहीं हो पाया है।

संजीवनी क्लिनिक की बिल्डिंग में कुछ खामियां हे जिसके लिए संबंधित निर्माण एजेंसी को निर्देश दिए गए हे वह शीघ्र अति शीघ्र उक्त खामियों को दूर करे ताकि क्लिनिक प्रारंभ हो सके

संदीप त्यागी, उप यंत्री नगर परिषद कैलारस

संजीवनी क्लिनिक का स्टाफ आ चुका हे, बिल्डिंग जैसे ही हमें मिलती हे क्लिनिक प्रारंभ कर देंगे*

डॉ एस आर मिश्रा, ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर कैलारस

विश्व पर्यावरण दिवस पर भा ज पा मंडल कैलारस के कार्यकर्ताओं ने किया पौधा रोपड़

कैलारस। विश्व पर्यावरण दिवस पर भारतीय जनता पार्टी के मण्डल कैलारस के अध्यक्ष कुलदीप सिंह भदौरिया के नेतृत्व में मण्डल कैलारस के कार्यकर्ताओं ने थाने के प्रांगण में पर्यावरण संरक्षण दिवस के अवसर पर पौधारोपण किया एवं मण्डल अध्यक्ष कुलदीप सिंह ने विश्व पर्यावरण दिवस पर भारतीय जनता पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि सभी साथी एक पेड़ अपने पूर्वजों के नाम से अवश्य लगाए और आग्रह किया कि जो पेड़ आपने लगाया है उसकी देख भाल भी आपको करनी है जिससे वह पेड़ जो आप ने लगाया है उह जीवित रहे इस समय विश्व पर्यावरण संकट से जूझ रहा है अगर हम लोगों ने आज पर्यावरण संरक्षण नहीं किया तो आने बाला समय हमारे लिए बहुत खतरनाक होने बाला है इसलिए हम सब संकल्प ले कि आने बाली पीड़ी की चिन्ता करते हुए पर्यावरण संरक्षण करते हुए पेड़ अवश्य लगाएगे और उस पेड़ की पानी खाद और और पेड़ की

सुरक्षा की चिन्ता करे एवं आम नागरिकों से अपील की पर्यावरण संरक्षण अभियान में जुड़ कर पेड़ अवश्य लगाए इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष किसान मोर्चा केशव पाराशर मण्डल महामंत्री बीरेंद्र बसेड़िया मण्डल उपाध्याय पूरन शिवहरे जनपद सदस्य मुकेश धाकड़ असलम खान मयंक गर्ग आदि समाज सेवी लोग उपस्थित रहे।

प्रकृति और संस्कृति दोनों को बचाने की जरूरत : ब्रह्माकुमारी कृष्णा दीदी

मुरैना,कांस। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सब्जी मंडी रोड पोरसा सेवाकेंद्र पर आज पर्यावरण दिवस मनाया गया जिसमें सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी कृष्णा दीदी जी ने सभी को वृक्षों का महत्व समझाया एवं बताया कि भारतीय संस्कृति में धरती को मां माना गया है, जब हम एक पेड़ लगाते हैं तो सिर्फ जड़ें नहीं गाढ़ते हैं बल्कि हम संस्कृति ,कर्तव्य और भविष्य को भी रोपते हैं। माता एवं प्रकृति निस्वार्थ प्रेम की प्रतिमूर्ति है। मां जीवन देती है और पेड़ जीवन को संजोते हैं। मातृशक्ति और प्रकृति के संवर्धन के उद्देश्य से जन्मदात्रि मां के सम्मान में लगाया गया हर पेड़ आशीर्वाद है।

प्रकृति को हरा – भरा बनाना है एक पेड़ मां के नाम लगाना है । प्रकृति ने हमें बहुमूल्य सम्पदा के रूप में अनेक उपहार दिए हैं। एक ओर विकास हो रहा है तो दूसरी ओर विनाश हो रहा है। प्रकृति को प्रदूषित करने के लिए हम सब दोषी हैं। प्राकृतिक वन को हमने उजाड़ा है। वन सरंक्षण के लिए लोगों में जन जागृति लाने की बहुत जरूरत है। हमें प्रकृति और संस्कृति दोनों को बचाने के लिए कार्य करना होगा। हमारा प्रदेश नदी-नालों और जंगलों से घिरा हुआ है। उन्हें सरंक्षित करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय प्रदूषण इतना विकराल रूप ले चुका है कि हरेक को अपनी व्यक्तिगत

जिम्मेदारी समझने की जरूरत है। आजकल प्लास्टिक बहुत बड़ी समस्या बन चुका है। इससे प्रकृति का दम घुट रहा है। अगर जीवन में खुशी चाहते हैं तो अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनका संवर्धन करें। दीदी जी ने बताया जल, जंगल, जमीन और जानवरों की सुरक्षा से ही पर्यावरण सरंक्षण संभव है। उन्होंने बतलाया कि प्रकृति के साथ-साथ मन के प्रदूषण को भी खत्म करने की जरूरत है। किसी के घर में मृत्यु होने पर उसके नाम से एक पेड़ जरूर लगाएं।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विधुत विभाग से विवेक प्रताप सिंह (जे.ई. पोरसा) उपस्थित रहे। उन्होंने सभी को संबोधित करते हुए कहा हमे अपने जीवन में पेड़ लगाने चाहिए और साथ में उनकी देखभाल करनी चाहिए। जैसे हम अपने परिवार के सदस्यों की देखभाल करते हैं वैसे ही हमें पेड़ पौधों की देखभाल करनी चाहिए।

पर्यावरण दिवस पर एन सी सी कैडेट्स ने लगाये पौधे

मुरैना,कांस। 5 जून को विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस के अवसर पर शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में डीप्टी कलेक्टर महोदय राजन नाड़िया व प्राचार्य मुकेश कुमार शांडिल्य तथा विद्यालय के अन्य शिक्षक राकेश कुमार शर्मा दीपक सेमिल धर्मेंद्र जादौन की उपस्थिति में एनसीसी कैडेट्स ने बड़ी मात्रा में वृक्षारोपण किया साथ ही 3 एमपी नेवल यूनिट के तत्वाधान में एनसीसी अधिकारी कविता सारस्वत के निर्देशन में पर्यावरण संरक्षण पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कैडेट्स खुशी यादव गौरी गर्ग शगुन सिकरवार व ऐश दोनेरिया मोनिका बघेल ने स्लोगन के लिखकर प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। कैडेट खुशबू प्रजापति सोनल तोमर शिखा यादव ने पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लिया।

नवागत डीआईजी सुनील जैन ने पदभार संभाला

मुरैना,कांस। श्री सुनील कुमार जैन(भा.पु.से) नवागत पुलिस उप महानिरीक्षक महोदय चंबल रेंज मुरैना द्वारा दिनांक 05/06/25 को उमनि चंबल रेंज मुरैना का पदभार ग्रहण किया गया।

बानमोर मे फैक्ट्री के जहरीले पानी से 5 भैस दो गाय कई मोरों की मौत

पशुपालक बैठे धरने पर 5 लाख मुआवजा की मांग की

बानमोर। बुधवार की शाम 6:00 बजे सीतापुर औद्योगिक क्षेत्र स्थित सात्विक केमिकल पाउडर फैक्ट्री से निकल रहे जहरीले पानी के पीने से पांच भैसे दो गाऐं तथा मोरों की मौत हो गई। इस घटना की सूचना जैसे ही ग्रामीणों को लगी तो पहाड़ी तथा खटाने का पुरा ग्रामीण अंचल के 200 से अधिक ग्रामीण जन फैक्ट्री गेट के बाहर धरने पर बैठ गए और पांच लाख रुपये मुआवजे की मांग करने लगे। फैक्ट्री गेट के बाहर भीड़ को देखते हुए फैक्ट्री प्रबंधक को पुलिस को बुलाना पड़ा। ग्रामीणों ने बताया कि फैक्ट्री प्रबंधक द्वारा फैक्ट्री से निकल रहे केमिकल युक्त जहरीले पानी को पुलिया के पास स्थित नाले में छोड़ा जा रहा है । जिसके पीने से उनके पशुओं की मौत हो गई है । घटना की सूचना

मिलने पर क्षेत्रीय विधायक दिनेश गुर्जर के भाई संजय छावई जी मौके पर पहुंच कर गांव वालों को मुआवजा दिलाने के लिए बातचीत की। करीब 4 घंटे तक चले धरने प्रदर्शन के बाद प्रबंधक द्वारा ग्रामीणों को दो लाख रुपए देने का आश्वासन दिया गया।

आज का वृक्ष, कल का भविष्य - राजन नाडिया

मुरैना,कांस। दिनांक 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर इको क्लब शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय क्रमांक 1 मुरैना एवं सुजागृति समाज सेवा संस्था मुरैना के संयुक्त तत्वाधान में पौधारोपण का कार्यक्रम किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डिप्टी कलेक्टर श्री राजन नाडिया उपस्थित रहे उनके द्वारा बताया गया कि आज एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम में हम सब यहां पर उपस्थित हुए हैं यह हमारी लिए सौभाग्य की बात है कि हम आज जो एक वृक्ष लगा रहे हैं कल वह वृक्ष आगे आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण संरक्षण का कार्य करेंगे मैं स्कूल के विद्यार्थियों से आव्हान करता हूं कि वह अपने आसपास, अपने विद्यालय में जहां पर भी खाली जगह मिले वहां पर अपनी मां के नाम का कम से कम एक पेड़ अवश्य लगावे। इस अवसर पर वृक्ष मित्र श्री रविंद्र सिंह कुशवाहा द्वारा कहा धरती की रक्षा जन भागीदारी से ही संभव है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉक्टर राकेश कुमार शर्मा ने कहा कि के इको क्लब उत्कृष्ट विद्यालय मुरैना एवं सुजागृति संस्था के सहयोग से जो औषधि पौधे लगाए जा रहे हैं कल वह सबके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेंगे। संस्था के अध्यक्ष जाकर हुसैन द्वारा संकल्प दिलाया कि हम सब मिलकर प्रकृति के साथ सहजीवन को अपनाएंगे और पर्यावरण अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएंगे। संस्था के प्राचार्य श्री मुकेश कुमार शांडिल्य द्वारा सभी लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि यहां पर आप सब हमारे

विद्यालय में उपस्थित हुए यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। जिला एवं संभागीय अध्यक्ष पर कर्मचारी संघ के श्री रामनरेश दंडोतिया ने भी अपनी बात रखी स्टेनो टू अपर कलेक्टर श्री सुरेंद्र सिंह यादव, एनसीसी नेवल प्रभारी श्रीमती कविता सारस्वत का विशेष सहयोग रहा, एनसीसी के कैडेट द्वारा साथ मैं वृक्षारोपण किया गया इस अवसर पर श्री राकेश शिवहरे,श्री धर्मेंद्र जादौन श्री गोपी शर्मा, केदार सिंह यादव, सामाजिक न्याय विभाग से राकेश श्रीवास्तव, मुन्नालाल जी उपस्थित रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर जिला न्यायालय परिसर में वृक्षारोपण कर, दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

ग्वालियर। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून के अवसर पर जिला न्यायालय परिसर ग्वालियर में एक भव्य एवं प्रेरणास्पद वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण, हरियाली को बढ़ावा देना और नागरिकों को जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूक करना था।इस अवसर पर प्रधान जिला न्यायाधीश श्री ललित किशोर गर्ग मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने स्वयं वृक्षारोपण कर कार्यक्रम की शुरुआत की और उपस्थित जनसमुदाय को पर्यावरण की महत्ता पर प्रेरणादायक संदेश दिया। उन्होंने कहा कि ÷आज का दिन हमें प्रकृति से जुड़ने, उसकी रक्षा करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक हरा-भरा भविष्य सुनिश्चित करने का संकल्प लेने का अवसर देता है।

उत्तर मध्य रेलवे

No-JHS-DY-CEE–C-T-01-2025/NIT Date:03.06.2025

ई-निविदा सूचना

उप. मुख्य विद्युत अभियन्ता (निर्माण), उत्तर मध्य रेल झाँसी, भारत के राष्ट्रपति के लिये और उनकी ओर से निम्न लिखित कार्य हेतु एक पैकेट सिस्टम पर ऑन लाइन (E-Tendering) के माध्यम से खुली निविदा आमन्त्रित करते हैं। निविदा दिनॉक 24.06.2025 को 15.00 बजे तक website http://www.ireps.gov.in. पर ऑन लाइन जमा की जा सकती है। निविदा के विवरण निम्नानुसार हैः-

निविदा सं.: E-Tender Notice No-JHS-DY-CEE–C-T-01-2025

कार्य का नामः Jhansi division of North Central Railway में (A) JHS-KID डबल लाइन सेक्शन, (B) ललितपुर - बीना तीसरी लाइन सेक्शन (C) ललितपुर - बिरारी सेक्शन में प्री-एनआई (Pre-NI) और एनआई (NI) के दौरान विभिन्न स्टेशनों पर Hiring basis के आधार पर अस्थायी प्रकाश व्यवस्था का प्रावधान।

अनुमानित लागत (₹): ₹ 2695586.84/- | धरोहर राशि(₹): ₹ 53900/-

कार्य पूर्ण होने की अवधि : 12 माह हार्वेस्ट एवं मानसून अवधि सहित

निविदा खोलने का दिनांक : 24.06.2025 | वैधता अवधिः 60 दिन

नोटः पूर्ण विवरण और निविदा जमा करने के लिए कृपया भारतीय रेलवे की वेबसाइट http://www.ireps.gov.in. देखें। 972/25(DG)

North central railways @CPRONCR www.ncr.indianrailways.gov.in

विश्व पर्यावरण दिवस पर चंबल शताब्दी संगठन ने पौधरोपण कर दिया स्वछता का संदेश

कैलारस। विश्व पर्यावरण दिवस पर कैलारस बाजार के मुख्य मार्ग, टंकी के नीचे एवं थाना परिसर में वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती अंजना बंसल एवं कैलारस तहसीलदार विश्राम सिंह बघेल ने संयुक्त रूप से की। इस अवसर पर अतिथियों ने संगठन के कार्यों की सराहना की और साथ जुड़े रहने का आश्वासन भी दिया इस अवसर पर चंबल शताब्दी संगठन द्वारा कैलारस के मुख्य बाजार क्षेत्र – गाँधी मार्ग, सुभाष मार्ग एवं शास्त्री मार्ग के मध्य स्थित रेलवे ट्रैक के समानांतर क्षेत्र में वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया। यह स्थान, जो पूर्व में गंदगी और कचरे के ढेर से प्रभावित रहता था, वहां अभियान चलाकर साफ-सफाई की गई और उसे हरा-भरा बनाने की दिशा में पहला कदम उठाया गया। दोनों ही जिम्मेदार अधिकारियों से स्थल का निरीक्षण कर वहां समतलीकरण, सुरक्षा हेतु

जाली लगाने तथा आसपास जनसुलभ शौचालय का निर्माण करवाने का आग्रह किया इसके लिए दोनों अधिकारियो ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन भी दिया। आज इस अवसर पर पुष्पेंद्र सिकरवार,भगवती उपाध्याय, शिवम् सिंगल, अरुण शर्मा, रवि सिंघल, रुद्राक्ष सर, कृष्णकांत गुप्ता,डॉ. बी.के तिवारी, दुर्गेश गोयल,सौरभ मंगल की विशेष उपस्थिति रही।

प्रकृति और संस्कृति दोनों को बचाने की जरूरत : ब्रह्माकुमारी कृष्णा दीदी

मुरैना,कांस। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सब्जी मंडी रोड पोरसा सेवाकेंद्र पर आज पर्यावरण दिवस मनाया गया जिसमें सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी कृष्णा दीदी जी ने सभी को वृक्षों का महत्व समझाया एवं बताया कि भारतीय संस्कृति में धरती को मां माना गया है, जब हम एक पेड़ लगाते हैं तो सिर्फ जड़ें नहीं गाढ़ते हैं बल्कि हम संस्कृति ,कर्तव्य और भविष्य को भी रोपते हैं। माता एवं प्रकृति निस्वार्थ प्रेम की प्रतिमूर्ति है। मां जीवन देती है और पेड़ जीवन को संजोते हैं। मातृशक्ति और प्रकृति के संवर्धन के उद्देश्य से जन्मदात्रि मां के सम्मान में लगाया गया हर पेड़ आशीर्वाद है।

प्रकृति को हरा – भरा बनाना है एक पेड़ मां के नाम लगाना है । प्रकृति ने हमें बहुमूल्य सम्पदा के रूप में अनेक उपहार दिए हैं। एक ओर विकास हो रहा है तो दूसरी ओर विनाश हो रहा है। प्रकृति को प्रदूषित करने के लिए हम सब दोषी हैं। प्राकृतिक वन को हमने उजाड़ा है। वन सरंक्षण के लिए लोगों में जन जागृति लाने की बहुत जरूरत है। हमें प्रकृति और संस्कृति दोनों को बचाने के लिए कार्य करना होगा। हमारा प्रदेश नदी-नालों और जंगलों से घिरा हुआ है। उन्हें सरंक्षित करने की आवश्यकता है। वर्तमान समय प्रदूषण इतना विकराल रूप ले चुका है कि हरेक को अपनी व्यक्तिगत

जिम्मेदारी समझने की जरूरत है। आजकल प्लास्टिक बहुत बड़ी समस्या बन चुका है। इससे प्रकृति का दम घुट रहा है। अगर जीवन में खुशी चाहते हैं तो अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनका संवर्धन करें। दीदी जी ने बताया जल, जंगल, जमीन और जानवरों की सुरक्षा से ही पर्यावरण सरंक्षण संभव है। उन्होंने बतलाया कि प्रकृति के साथ-साथ मन के प्रदूषण को भी खत्म करने की जरूरत है। किसी के घर में मृत्यु होने पर उसके नाम से एक पेड़ जरूर लगाएं।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विधुत विभाग से विवेक प्रताप सिंह (जे.ई. पोरसा) उपस्थित रहे। उन्होंने सभी को संबोधित करते हुए कहा हमे अपने जीवन में पेड़ लगाने चाहिए और साथ में उनकी देखभाल करनी चाहिए। जैसे हम अपने परिवार के सदस्यों की देखभाल करते हैं वैसे ही हमें पेड़ पौधों की देखभाल करनी चाहिए।

नवागत डीआईजी सुनील जैन ने पदभार संभाला

मुरैना,कांस। श्री सुनील कुमार जैन(भा.पु.से) नवागत पुलिस उप महानिरीक्षक महोदय चंबल रेंज मुरैना द्वारा दिनांक 05/06/25 को उमनि चंबल रेंज मुरैना का पदभार ग्रहण किया गया।

आज का वृक्ष, कल का भविष्य - राजन नाडिया

मुरैना,कांस। दिनांक 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर इको क्लब शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय क्रमांक 1 मुरैना एवं सुजागृति समाज सेवा संस्था मुरैना के संयुक्त तत्वाधान में पौधारोपण का कार्यक्रम किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डिप्टी कलेक्टर श्री राजन नाडिया उपस्थित रहे उनके द्वारा बताया गया कि आज एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम में हम सब यहां पर उपस्थित हुए हैं यह हमारी लिए सौभाग्य की बात है कि हम आज जो एक वृक्ष लगा रहे हैं कल वह वृक्ष आगे आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण संरक्षण का कार्य करेंगे मैं स्कूल के विद्यार्थियों से आव्हान करता हूं कि वह अपने आसपास, अपने विद्यालय में जहां पर भी खाली जगह मिले वहां पर अपनी मां के नाम का कम से कम एक पेड़ अवश्य लगावे। इस अवसर पर वृक्ष मित्र श्री रविंद्र सिंह कुशवाहा द्वारा कहा धरती की रक्षा जन भागीदारी से ही संभव है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉक्टर राकेश कुमार शर्मा ने कहा कि के इको क्लब उत्कृष्ट विद्यालय मुरैना एवं सुजागृति संस्था के सहयोग से जो औषधि पौधे लगाए जा रहे हैं कल वह सबके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेंगे। संस्था के अध्यक्ष जाकर हुसैन द्वारा संकल्प दिलाया कि हम सब मिलकर प्रकृति के साथ सहजीवन को अपनाएंगे और पर्यावरण अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएंगे। संस्था के प्राचार्य श्री मुकेश कुमार शांडिल्य द्वारा सभी लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि यहां पर आप सब हमारे

विद्यालय में उपस्थित हुए यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। जिला एवं संभागीय अध्यक्ष पर कर्मचारी संघ के श्री रामनरेश दंडोतिया ने भी अपनी बात रखी स्टेनो टू अपर कलेक्टर श्री सुरेंद्र सिंह यादव, एनसीसी नेवल प्रभारी श्रीमती कविता सारस्वत का विशेष सहयोग रहा, एनसीसी के कैडेट द्वारा साथ मैं वृक्षारोपण किया गया इस अवसर पर श्री राकेश शिवहरे,श्री धर्मेंद्र जादौन श्री गोपी शर्मा, केदार सिंह यादव, सामाजिक न्याय विभाग से राकेश श्रीवास्तव, मुन्नालाल जी उपस्थित रहे।

बानमोर मे फैक्ट्री के जहरीले पानी से 5 भैस दो गाय कई मोरों की मौत

पशुपालक बैठे धरने पर 5 लाख मुआवजा की मांग की

बानमोर। बुधवार की शाम 6:00 बजे सीतापुर औद्योगिक क्षेत्र स्थित सात्विक केमिकल पाउडर फैक्ट्री से निकल रहे जहरीले पानी के पीने से पांच भैसे दो गाऐं तथा मोरों की मौत हो गई। इस घटना की सूचना जैसे ही ग्रामीणों को लगी तो पहाड़ी तथा खटाने का पुरा ग्रामीण अंचल के 200 से अधिक ग्रामीण जन फैक्ट्री गेट के बाहर धरने पर बैठ गए और पांच लाख रुपये मुआवजे की मांग करने लगे। फैक्ट्री गेट के बाहर भीड़ को देखते हुए फैक्ट्री प्रबंधक को पुलिस को बुलाना पड़ा। ग्रामीणों ने बताया कि फैक्ट्री प्रबंधक द्वारा फैक्ट्री से निकल रहे केमिकल युक्त जहरीले पानी को पुलिया के पास स्थित नाले में छोड़ा जा रहा है । जिसके पीने से उनके पशुओं की मौत हो गई है । घटना की सूचना

मिलने पर क्षेत्रीय विधायक दिनेश गुर्जर के भाई संजय छावई जी मौके पर पहुंच कर गांव वालों को मुआवजा दिलाने के लिए बातचीत की। करीब 4 घंटे तक चले धरने प्रदर्शन के बाद प्रबंधक द्वारा ग्रामीणों को दो लाख रुपए देने का आश्वासन दिया गया।

पर्यावरण दिवस पर एन सी सी कैडेट्स ने लगाये पौधे

मुरैना,कांस। 5 जून को विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस के अवसर पर शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में डीप्टी कलेक्टर महोदय राजन नाड़िया व प्राचार्य मुकेश कुमार शांडिल्य तथा विद्यालय के अन्य शिक्षक राकेश कुमार शर्मा दीपक सेमिल धर्मेंद्र जादौन की उपस्थिति में एनसीसी कैडेट्स ने बड़ी मात्रा में वृक्षारोपण किया साथ ही 3 एमपी नेवल यूनिट के तत्वाधान में एनसीसी अधिकारी कविता सारस्वत के निर्देशन में पर्यावरण संरक्षण पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कैडेट्स खुशी यादव गौरी गर्ग शगुन सिकरवार

व ऐश दोनेरिया मोनिका बघेल ने स्लोगन के लिखकर प्रतियोगिता में हिस्सा लिया।

- विश्व पर्यावरण दिवस और गंगा दशहरा का एक ही दिन पर होना, बताता है कि भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की कितनी महत्ता है
- हम पौधे को पुत्र समान मानते हैं
- भारतीय जीवनशैली में रची-बसी है रिसाइकिल-री-यूज की प्रक्रिया
- जल संरक्षण के लिए 75 हजार से अधिक खेत-तालाबों का निर्माण किया गया
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एक पेड़ मां के नाम-2025 अभियान का किया शुभारंभ
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पर्यावरण प्रबंधन पोर्टल का लोकार्पण और वेटलैंड एटलस का किया विमोचन
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने म.प्र. वार्षिक पर्यावरण पुरस्कार प्रदान किए
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विश्व पर्यावरण दिवस पर किया संबोधित
- कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में हुआ राज्य स्तरीय कार्यक्रम

अगली पीढ़ी को बेहतर धरती और वातावरण सौंपने के लिए पर्यावरण संरक्षण के प्रति सभी को सचेत होना होगा - मुख्यमंत्री

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने दिया एक पेड़ मां के नाम अभियान से जन-जन को पर्यावरण संरक्षण से जुड़ने का मौका

भोपाल,ब्यूरो।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि विश्व पर्यावरण दिवस है और गंगा दशहरा भी आज है। दोनों भारतीय संस्कृति के लिए विशेष महत्व रखते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पर्यावरण संरक्षण को एक पेड़ मां के नाम अभियान के साथ जोड़ा है। राज्य सरकार आज से इस अभियान की शुरुआत कर रही है। हमारी संस्कृति में एक वृक्ष को सौ पुत्रों के बराबर माना है। परंपरागत रूप से कहा जाता है कि एक बावड़ी 10 कुओं के बराबर है, 10 बाबड़ी एक तालाब के बराबर है, 10 तालाब एक पुत्र के बराबर है और 100 पुत्र एक वृक्ष के समान है। पुत्रों की तुलना वृक्ष के साथ करना, प्रकृति की महत्ता को दर्शाता है। अगर प्रकृति संरक्षित रहेगी तो हमें अपने आप फलने-फूलने का अवसर मिलता रहेगा। वर्तमान दौर में भारतीय संस्कृति और प्राचीन ज्ञान को पुनर्स्थापित करने का समय है। आज रिसाइकिलिंग और री-यूज की चर्चा की जाती है, न्यूनतम संसाधनों से बेहतर जीवनशैली की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। अगली पीढ़ी को बेहतर धरती और वातावरण सौंपने के लिए पर्यावरण संरक्षण के प्रति सभी को सचेत होना होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव विश्व पर्यावरण दिवस पर कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस वर्ष पर्यावरण दिवस का विषय प्लास्टिक प्रदूषण उन्मूलन है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सबको स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में योगदान देना होगा। वायु की गुणवत्ता मे सुधार, प्लास्टिक के उपयोग को कम करने और जल संरक्षण के लिए व्यक्तिगत जवाबदेही और सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना जरूरी है। राज्य सरकार पर्यावरण अनुकूल उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारतीय पौराणिक कथाओं में वृक्षों, नदियों, पहाड़ों के साथ-साथ वन्यजीवों की पूजा के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा दी गई है, हमें इनसे प्रेरणा लेनी होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 19वीं शताब्दी में महान वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु ने लंदन में रायल सोसाइटी को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध करके बताया कि पौधों में प्राण होते हैं। जबकि भारत के लोक मानस में यह ज्ञान सदियों से रचा-बसा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार संस्कृति को संरक्षित करते हुए अलग-अलग क्षेत्रों में विकास कार्यों को गति प्रदान कर रही है। पर्यावरण दिवस पर सभी पुरस्कार विजेता बधाई के पात्र हैं। बदलते दौर में प्लास्टिक के उपयोग को लेकर री-यूज, रि-साइकिल की बात कही जा रही है, यह प्रक्रियाएं भारतीय जीवनशैली में पहले से ही विद्यमान हैं। हमने नेट जीरो एमीशन का लक्ष्य रखा है।

सिकल सेल रोग अनुसंधान के लिए चिकित्सक आगे आएं: राज्यपाल

शादी के पूर्व जेनेटिक कार्ड मिलान जरूर किया जाये

भोपाल,ब्यूरो।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों में शोध और अनुसंधान पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। चिकित्सा की विभिन्न पद्धतियों के द्वारा रोग उन्मूलन के लिए समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हमारे वनों में प्रचुर मात्रा में जड़ी-बूटियां उपलब्ध है। आवश्यकता शोध और अनुसंधान के द्वारा उनकी उनकी उपयोगिता के प्रमाणीकरण की है।

राज्यपाल श्री पटेल गांधी मेडिकल कॉलेज में आयोजित सिकलसेल सेंसेटाइजेशन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन गांधी मेडिकल कॉलेज की एलुमिनाई द्वारा किया गया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल भी मौजूद रहे। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि सिकल सेल के उन्मूलन प्रयासों के लिए सबके साथ और सबके प्रयासों की एकजुट आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर सिकल सेल की जागरुकता में सक्रिय सहभागिता करें। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि वर्ष 2047 तक सिकल सेल उन्मूलन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जागरुकता ही सबसे बड़ा टूल है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति सिकल सेल के लक्षणों, उपचार और संभावनाओं के प्रति स्वयं जागरूक हो। फिर जागरूकता दूत के रूप में अपने आस-पास, और समुदाय को जागरूक करें। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि नई पीढ़ी को सिकल सेल एनीमिया से बचाने के लिए वर-वधू शादी के पूर्व सिकल सेल जेनेटिक कार्ड का मिलान ज़रूर करें। गर्भावस्था में जरूरी जाँचे कराए।

राज्यपाल श्री पटेल ने रामफल का पौधा रोप कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

पेड़ लगा कर देखभाल भी करे, राज्यपाल ने प्रदेशवासियों से की अपील

भोपाल राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर राजभवन के नवग्रह उद्यान में पौधारोपण किया। उन्होंने रामफल का पौधा लगाया। राज्यपाल श्री पटेल ने प्रदेशवासियों से भी पेड़ लगाने और उनकी देखभाल करने की अपील की। उन्होंने कहा कि हम सभी अपने जीवन के विशेष अवसरों जैसे जन्म दिवस, वर्षगांठ आदि पर एक पेड़ अवश्य लगाएं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सिंदूर का पौधा रोपा

भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विश्व पर्यावरण दिवस पर उज्जैन में दताना एयर स्ट्रिप पर सिंदूर के पौधे का रोपण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पौधा रोपकर प्रदेशवासियों को मानव जीवन के लिए प्रकृति के संरक्षण का महत्वपूर्ण संदेश दिया। इस अवसर पर उज्जैन के प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल, विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा और जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

पचमढ़ी सिल्क-टेक पार्क को प्रोजेक्ट मोड में विकसित किया जाए : राज्य मंत्री श्री जायसवाल

भोपाल कुटीर एवं ग्रामोद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री दिलीप जायसवाल ने कहा है कि पचमढ़ी सिल्क टेक पार्क को प्रोजेक्ट मोड में विकसित करने की आवश्यकता है। मंत्री श्री जायसवाल सिल्क-टेक पार्क पचमढ़ी का भ्रमण कर रहे थे। उन्होंने प्राकृतिक सिल्क शोरूम व मूंगा रेशम उत्पादन की गतिविधियों और प्रदेश के एकमात्र रेशम बीज उत्पादन केन्द्र की गतिविधियों का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर राज्य मंत्री नगरीय प्रशासन एवं आवास श्रीमती प्रतिमा बागरी और राज्य मंत्री पंचायत एवं ग्रामीण विकास श्रीमती राधारानी सिंह ने भी रेशम केन्द्र तथा प्राकृत शोरूम पचमढ़ी का भ्रमण किया। पचमढ़ी प्रदेश का एकमात्र केन्द्र है जहां चारों प्रकार का रेशम होता है।

प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस मना

ग्वालियर। प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान के प्रांगण में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य संस्थान के विद्यार्थी के बीच पर्यावरण जागरूकता को फैलाना और सतत विकास पद्धतियों से जागरूक करवाना था। इस अवसर पर कॉलेज प्रांगण में 100 से अधिक पौधे लगाये गये। इस अवसर पर संस्थान की प्राचार्या मैनेजमेंट डॉ0 राखी सिंह चौहान ने बताया कि पर्यावरण के बिना हमारा जीवन संभव नहीं है और पर्यावरण को अपने लिए तथा आने वाली पीढ़ी के लिए संभाल कर रखना होगा। उन्होंने बताया कि इस साल विश्व पर्यावरण दिवस की थीम प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाना है। हम सबको पेड़ पौधे भी लगाना चाहिए। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. चेतन्या सिंह, नेहा भदौरिया तथा विशेष उपमन्यु थे।

सहकारिता विभाग पूरी प्लानिंग के साथ सोसायटी और परिसरों में लगाये पौधे

मंत्री श्री सारंग ने अपेक्स बैंक परिसर में लगाया अशोक वृक्ष

भोपाल,ब्यूरो।

सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने कहा है कि सहकारिता विभाग पूरी प्लानिंग के साथ हर सोसायटी और विभागीय परिसरों में पौधरोपण करें। उन्होंने इसके लिये राज्य संघ और बीज संघ को इसकी जिम्मेदारी दी। उन्होंने कहा कि दीर्घकालीन और छायादार सहित उपयोगी प्रजाति के पौधो का रोपण किया जाये। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि मास्टर प्लान इस तरह का हो कि संरक्षण और संवर्धन के साथ साल भर में लाखों पौधे लगे। मंत्री श्री सारंग ने गुरूवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक पेड़ माँ के नाम कार्यक्रम के तहत अपेक्स बैंक परिसर में अशोक का पौधा रोपा। अपर मुख्य सचिव श्री अशोक वर्णवाल ने भी पौधरोपण किया।

एबीवी आईआईआईटीएम के लेडीज़ क्लब ने पौधारोपण कार्यक्रम किया

ग्वालियर,नसं.।

एबीवी - आई. आई. आई. टी. एम. ग्वालियर संस्थान के लेडीज़ क्लब के तत्वावधान से संस्थान में पर्यावरण दिवस के उपलक्षय में वृक्षारोपण किया गया। क्लब के प्रत्येक सदस्य के द्वारा अपनी माँ के नाम एक एक पौधा लगाया गया। क्लब की प्रेसिडेंट वंदना सिंह के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में सभी ने बढ़ चढ़कर सहयोग किया एवं संस्थान के हरित परिसर को और भी हरियाली से भरपूर करने के लिए इस अवसर पर प्रण लिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षा श्रीमति वंदना सिंह के साथ इस अवसर पर तुलिका श्रीवास्तव, माधुरी पटनायक, रीना श्रीवास्तव, डॉ. अनुराज सिंह, जेंकिन सूजी, पलक चौधरी इत्यादि मुख्य रूप से उपस्थित रहीं।

विश्व पर्यावरण दिवस पर तीन दिवसीय महोत्सव गमले पौधा वितरण के साथ सम्पन्न

ग्वालियर,नसं.।

एसोसिएशन ऑफ ग्वालियर यूथ सोसायटी एवम् संरचना समिति के संयुक्त तत्वावधान में 3 जून से 5 जून तक तीन दिवसीय विश्व पर्यावरण दिवस पर महोत्सव का आयोजन किया जा रहा था इस महोत्सव के दौरान विभिन्न आयोजन आयोजित किये गये इसमें बच्चों के लिए फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई इसके माध्यम से भी पर्यावरण जागरूकता का संदेश दिया चित्रांकन प्रतियोगिता आयोजित की गई चित्रों के माध्यम से भी जनजागरण अभियान चलाया गया और आज पौधा वितरण का आयोजन स्थानीय फूलबाग चौराहे पर मैन रोड पर प्रात: 7 बजे किया गया। इसमें राहगीरों को पौधा वितरण किया गया ।

संस्था की संयोजिका डॉ शिखा कटठल ने बताया कि इस अवसर पर क़रीब 200 लोगों को गमले सहित पौधे वितरण किया गया इसमें आम, जामफल, सीतफल, जामुन, अनार, नींबू आंवला, बेलपत्र,सहित अन्य प्रकार के पौधे वितरण किये गये आज के इस आयोजन में अतिथि हेतु हमारे बीच जय प्रकाश राजौरिया जी भाजपा जिलाध्यक्ष ग्वालियर वरिष्ठ भाजपा नेता श्री राजेश सोलंकी जी एडीशनल एसपी नरेश बाबू अननोटिया थाना प्रभारी कोतवाली मोहिनी वर्मा उपस्थित थीं सभी ने मिलकर पौधे वितरण किये इस अवसर पर पधारे मुख्य अतिथि राजौरिया ने कहा कि पर्यावरण के प्रति जागरूक होना अति आवश्यक है पौधे जीवन में अनमोल है इसका मोल समझना चाहिए और पौधे ज़रूर लगायें कहीं पर भी लगायें और इसका महत्व समझें और देख-रेख भी समय समय पर करते रहे संजय कटठल ने बताया कि संस्था द्वारा प्रत्येक वर्ष इस आयोजन को बढ़ चढ़कर मनाया जाता है आज के इस आयोजन में सुनील कट्ठल विशाल जैन अशोक जैन डॉ मनीष रस्तोगी, धीरज गोयल, उपस्थित थे।

गडकरी का ग्रीन प्रोजेक्ट बन गया भ्रष्टाचार का माध्यम

ग्वालियर,नसं.।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ग्वालियर द्वारा केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी द्वारा लागू की गई ग्रीन हाईवे परियोजना को भ्रष्टाचार का माध्यम बना कर प्लांटेशन करने वाली कंपनियों को करोड़ों रुपए का भुगतान करके सड़कों के बीच में लगाए गए करोड़ों की तादाद में पौधे मार दिए गए हैं। ग्वालियर के प्रोजेक्ट डायरेक्टर उमाकांत मीणा के संरक्षण में किए गए भ्रष्टाचार के मामले में जिला कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान से हस्तक्षेप करने की मांग की है। मध्य प्रदेश आरटीआई फाउंडेशन के अध्यक्ष एडवोकेट संजय दीक्षित ने उक्त जानकारी देते हुए बताया की मुरैना से लेकर शिवपुरी जिले तक 15 प्लांटेशन कंपनियों ने वृक्षारोपण किया है जिसकी मॉनिटरिंग ग्वालियर के प्रोजेक्ट डायरेक्टर उमाकांत मीणा द्वारा की जा रही है । दीक्षित ने इस मामले में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह और केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से हस्तक्षेप करने की मांग करते हुए प्रकरण की जांच उच्च स्तरीय कमेटी से करने की मांग की है।

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक,प्रकाशक, रामविलास शर्मा द्वारा पहल प्रिंटर्स प्लाट नं. 27 बांके सैंथिया टाउन मौजा ककुआ आगरा, उत्तरप्रदेश से मुद्रित व 192,मानस नगर शाहगंज बोदला रोड आगरा (उत्तरप्रदेश) से प्रकाशित। संपादक- रामविलास शर्मा मोबा.-9329077393
स्थानीय संपादक- संतोष शर्मा.मो.97202 02708, email-sandhyapahal@yahoo.com आर.एन.आई.पंजीयन क्रमांक UPHIN/2008/25338 सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र मुरैना ही रहेगा।